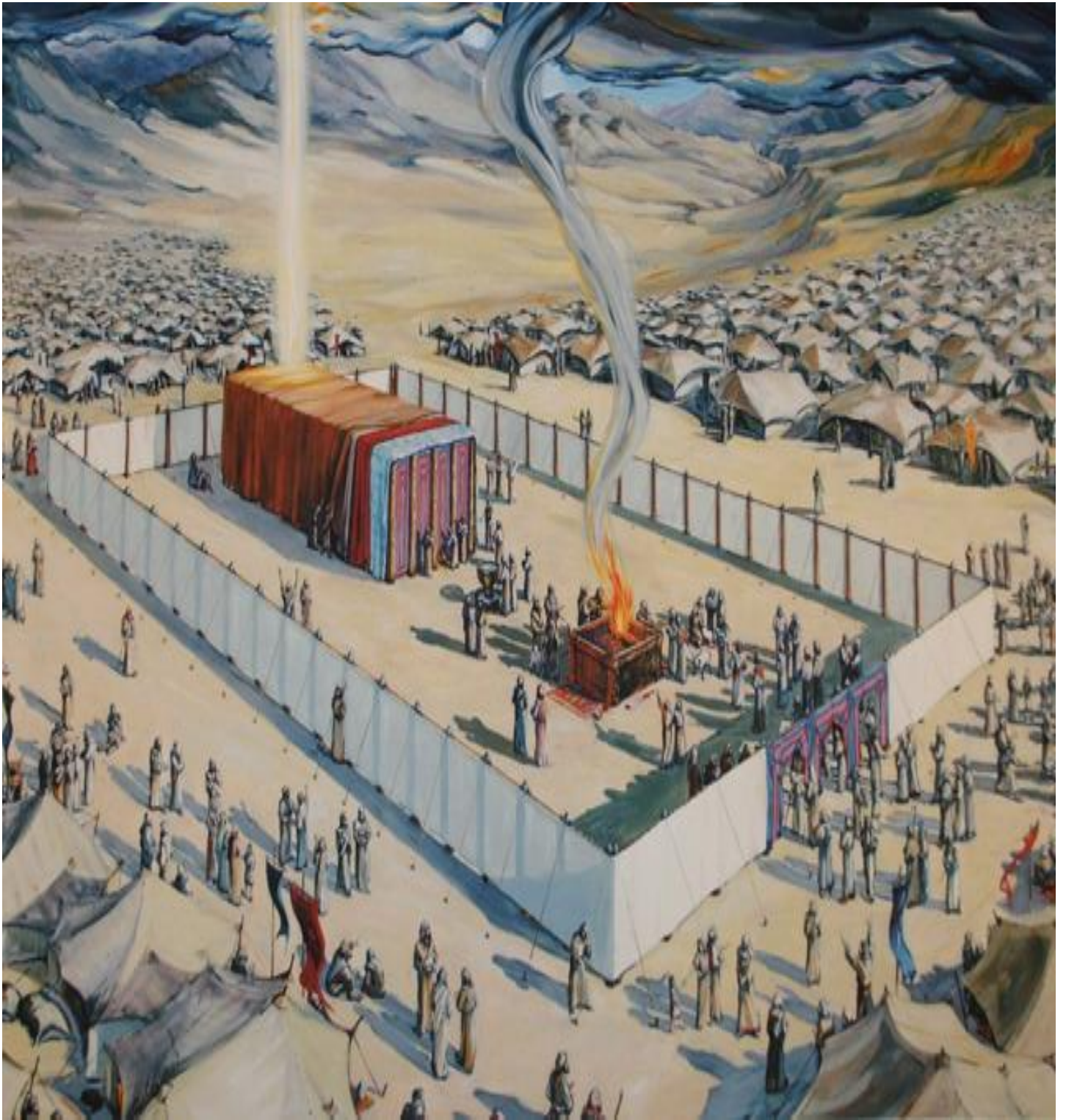


मसीह से पहले का समय



Randolph Dunn

The Man Who Was God

You are encouraged to study your Bible to prove the truth presented in these lessons or any other lesson. The comments presented herein are those of the authors and the compiler. You should verify their comments and opinions and teachings by others; e.g., a pastor, preacher, priest, rabbi, commentator, or publisher as it is YOUR responsibility to seek, know and do God's will.

In verifying to read different Bible translations, refer to Bible dictionaries and lexicons for meaning of words or phrases you do not know. Be careful with dictionary definitions as dictionaries give meaning of words and phrases from original language through current usage.

The meaning of words and phrases change over time. Also, several Greek words may be translated into one word in English and may distort the original meaning. For instance, the Greek words *de* and *kai* were translated as "and" in English. *De* is used to separate two nouns whereas *kai* connects two nouns.

Let God speak to you from His Holy Word as recorded in the Bible.



International Bible Knowledge Institute

IBKI grants permission to reproduce for non-commercial purposes lessons in their entirety without change or charge.

Randolph Dunn, President - Roberto Santiago, Dean

Visit our website Thebibleway.net

Contact us at info.India.IBKI@gmail.com

मसीह से पहले का समय

इन पाठों या किसी अन्य पाठ में प्रस्तुत सत्य को साबित करने के लिए आपको अपनी बाइबल का अध्ययन करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। यहाँ प्रस्तुत टिप्पणियाँ लेखकों और संकलनकर्ताओं की हैं। आपको दूसरों द्वारा उनकी टिप्पणियों और राय और शिक्षाओं को सत्यापित करना चाहिए; उदाहरण के लिए, एक पादरी, उपदेशक, पुजारी, रब्बी, टिप्पणीकार, या प्रकाशक क्योंकि यह आपकी जिम्मेदारी है कि आप परमेश्वर की इच्छा को खोजें, जानें और करें।

विभिन्न बाइबल अनुवादों को पढ़ने के लिए सत्यापित करने में, उन शब्दों या वाक्यांशों के अर्थ के लिए बाइबल शब्दकोश और शब्दकोष देखें जिन्हें आप नहीं जानते हैं। शब्दकोश परिभाषाओं से सावधान रहें क्योंकि शब्दकोश वर्तमान उपयोग के माध्यम से मूल भाषा से शब्दों और वाक्यांशों का अर्थ देते हैं।

समय के साथ शब्दों और वाक्यांशों के अर्थ बदल जाते हैं। इसके अलावा, कई ग्रीक शब्दों का अंग्रेजी में एक शब्द में अनुवाद किया जा सकता है और मूल अर्थ को विकृत कर सकता है। उदाहरण के लिए, ग्रीक शब्द डे और काई का अंग्रेजी में "और" के रूप में अनुवाद किया गया था। डे दो संज्ञाओं को अलग करने के लिए प्रयोग किया जाता है जबकि काई दो संज्ञाओं को जोड़ता है।

परमेश्वर को अपने पवित्र वचन से आप से बात करने दें जैसा कि बाइबल में दर्ज है।



अंतर्राष्ट्रीय बाइबिल ज्ञान संस्थान IBKI बिना किसी परिवर्तन या शुल्क के गैर-व्यावसायिक उद्देश्यों के पाठों को उनकी संपूर्णता में पुनः पेश करने की अनुमति देता है। रैंडोल्फ़ डन, राष्ट्रपति - रॉबर्ट सैंटियागो, डीन हमारी वेबसाइट Thebibleway.net पर जाएँ हमसे info.India.IBKI@gmail.com पर संपर्क करें

Time Before Christ

Creation and Fall

Lesson 1

"In the beginning God created the heavens and the earth. Now the earth was formless and empty, darkness was over the surface of the deep, and the Spirit of God was hovering over the waters. And God said, 'Let there be light,' and there was light" (Genesis 1:1-3). While John 1:1-3 states, "In the beginning was the Word, and the Word was with God, and the Word was God. He was with God in the beginning. Through him all things were made; without him nothing was made that has been made." The only thing man knows about the beginning is what God has chosen to reveal to him. Theories of "learned men" are unproven and often contrary to what has been revealed.

The last day of creation as recorded in Genesis 1:26-27 is "Then God said, 'Let us make man in our image, in our likeness, and let them rule over the fish of the sea and the birds of the air, over the livestock, over all the earth, and over all the creatures that move along the ground.' So, God created man in his own image, in the image of God he created him; male and female he created them." This creation was different from all His other creations as man was made in God's likeness, in His image. Man is not an exact copy of God. Man was created flesh and blood while God is spirit.

God put man in the midst of the rest of creation to rule over and have dominion over it. He told the man, Adam, to work it and take care of it. "And the LORD God commanded the man, 'You are free to eat from any tree in the garden; but you must not eat from the tree of the knowledge of good and evil, for when you eat of it you will surely die.'" (Genesis 2:16-17)

The Devil took on the form of a serpent to tempt Eve, lying to her. "When the woman saw that the fruit of the tree was good for food and pleasing to the eye, and also desirable for gaining wisdom, she took some and ate it. She also gave some to her husband, who was with her, and he ate it." (Genesis 3:6)

सुलह का परमेश्वर का संदेश

निर्माण और पतन

पाठ 1

"आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी को बनाया। अब पृथ्वी निराकार और खाली थी, अन्धकार की सतह पर अन्धकार था, और परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मँडरा रहा था। और परमेश्वर ने कहा, 'प्रकाश होने दो, ' और ज्योति थी" (उत्पत्ति 1:1-3)। जबकि यूहन्ना 1:1-3 कहता है, "आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के पास था, और वचन परमेश्वर था। वह आरम्भ में परमेश्वर के साथ था। उसके द्वारा सब कुछ बनाया गया; उसके बिना कुछ भी नहीं बना जिसे बनाया गया है।" शुरुआत के बारे में मनुष्य केवल वही जानता है जिसे परमेश्वर ने उसे प्रकट करने के लिए चुना है। "शिक्षित पुरुषों" के सिद्धांत अप्रमाणित हैं और अक्सर जो सामने आया है उसके विपरीत है।

उत्पत्ति 1:26-27 में वर्णित सृष्टि का अंतिम दिन है "तब परमेश्वर ने कहा, 'आओ हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं, और वे समुद्र की मछलियों और आकाश के पक्षियों पर प्रभुता करें। पशुओं पर, और सारी पृथ्वी पर, और सब प्राणियों पर जो भूमि पर रेंगते हैं।" सो परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, परमेश्वर के स्वरूप के अनुसार उस ने उसको उत्पन्न किया, नर और नारी करके उस ने उनकी सृष्टि की।" यह सृष्टि उसकी अन्य सभी कृतियों से भिन्न थी क्योंकि मनुष्य को परमेश्वर की समानता में, उसके स्वरूप में बनाया गया था। मनुष्य ईश्वर की सटीक प्रति नहीं है। मनुष्य को मांस और रक्त बनाया गया था जबकि ईश्वर आत्मा है।

परमेश्वर ने मनुष्य को शेष सृष्टि के बीच में शासन करने और उस पर प्रभुत्व रखने के लिए रखा। उसने आदम, आदम से कहा कि वह काम करे और उसकी देखभाल करे। "और यहोवा परमेश्वर ने उस मनुष्य को आज्ञा दी, कि तू बाटिका के किसी भी वृक्ष का फल खाने को स्वतंत्र है, परन्तु भले या बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल न खाना, क्योंकि जब तू उसका फल खाएगा, तो निश्चय मर जाएगा।" (उत्पत्ति 2:16-17)

शैतान ने हव्वा को झूठ बोलने के लिए लुभाने के लिए एक सर्प का रूप धारण किया। "जब स्त्री ने देखा कि वृक्ष का फल खाने में अच्छा, और आंख को भाता है, और बुद्धि के लिये भी मनभावन है, तब उस ने कुछ लेकर खा लिया। इसे खाया।" (उत्पत्ति 3:6)

James defines the temptation process: "but each one is tempted when, by his own evil desire, he is dragged away and enticed. Then, after desire has conceived, it gives birth to sin; and sin, when it is full-grown, gives birth to death." (James 1:14-15)

To Eve the fruit was pleasing to the eye and desirable to make her wise but disobedience has consequences. In this case the consequence was immediate. However, in some situations sin may not be found out until the judgment when one faces God. They were removed from paradise to a land of toil and pain. God said to the serpent "Because you have done this, Cursed are you above all the livestock and all the wild animals! You will crawl on your belly and you will eat dust all the days of your life. And I will put enmity between you and the woman, and between your offspring and hers; he will crush your head, and you will strike his heel.' To the woman he said, 'I will greatly increase your pains in childbearing; with pain you will give birth to children. Your desire will be for your husband, and he will rule over you.' To Adam he said, 'Because you listened to your wife and ate from the tree about which I commanded you, 'You must not eat of it', 'Cursed is the ground because of you; through painful toil you will eat of it all the days of your life. It will produce thorns and thistles for you, and you will eat the plants of the field. By the sweat of your brow you will eat your food until you return to the ground, since from it you were taken; for dust you are and to dust you will return'." (Genesis 3:14-19)

With this sin both **Adam and Eve were separated from God and in need of being reunited with Him. This reconciliation would require a perfect sacrifice for their sin of disobedience.**

Questions

1. The only instruction God gave to Adam was not to eat of the tree of knowledge of good and evil.
True _____ False _____
2. Adam, consequently all mankind, was created
A _____ exactly like God.
B _____ like all other animals that breathed air.
C _____ in the likeness of God.

याकूब प्रलोभन की प्रक्रिया को परिभाषित करता है: "परन्तु हर एक की परीक्षा तब होती है, जब वह अपनी ही बुरी अभिलाषा से घसीटा और बहकाया जाता है। फिर, अभिलाषा के गर्भवती होने के बाद, वह पाप को जन्म देती है, और पाप, जब वह पूर्ण रूप से विकसित हो जाता है, मृत्यु को जन्म देता है।" (याकूब 1:14-15)

हव्वा के लिए फल आंख को भाता था और उसे बुद्धिमान बनाने के लिए वांछनीय था, लेकिन अवज्ञा के परिणाम हैं। इस मामले में परिणाम तत्काल था। हालाँकि, कुछ स्थितियों में पाप का पता तब तक नहीं लगाया जा सकता जब तक कि वह परमेश्वर का सामना न कर दे। उन्हें स्वर्ग से हटाकर परिश्रम और पीड़ा के देश में ले जाया गया। परमेश्वर ने सर्प से कहा, "इस कारण तू ने ऐसा किया है, तू सब पशुओं और सब वनपशुओं से अधिक शापित है! तू अपने पेट के बल रेंगेगा, और जीवन भर धूल खाएगा। तू और स्त्री, और तेरे वंश और उसके वंश के बीच में वह तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उसकी एड़ी पर वार करेगा।" उस स्त्री से उस ने कहा, मैं तेरे जनने की पीड़ा को बहुत बढ़ाऊंगा, और तू पीड़ा के साथ सन्तान उत्पन्न करेगी। तेरी इच्छा तेरे पति की होगी, और वह तुझ पर प्रभुता करेगा। उस ने आदम से कहा, क्योंकि तू ने अपक्की पत्नी की बात मानकर उस वृक्ष का फल खाया, जिसके विषय में मैं ने तुझे आज्ञा दी थी, कि उसका फल न खाना, क्योंकि भूमि तेरे कारण शापित है; तू उस में से जीवन भर कठिन परिश्रम करके खाएगा। वह तुम्हारे लिये काँटे और ऊँट पैदा करेगा, और तुम मैदान के पौधे खाओगे। जब तक तू भूमि पर न लौट जाए, तब तक तू अपने माथे के पसीनेके पसीनेसे खाएगा; तू मिट्टी है, और मिट्टी में फिर मिल जाएगा।" (उत्पत्ति 3:14-19) जब तक तू भूमि पर न लौट जाए, तब तक तू अपने माथे के पसीनेके पसीनेसे खाएगा; तू मिट्टी है, और मिट्टी में फिर मिल जाएगा।" (उत्पत्ति 3:14-19) जब तक तू भूमि पर न लौट जाए, तब तक तू अपने माथे के पसीनेके पसीनेसे खाएगा; तू मिट्टी है, और मिट्टी में फिर मिल जाएगा।" (उत्पत्ति 3:14-19)

इस पाप के साथ आदम और हव्वा दोनों को परमेश्वर से अलग कर दिया गया था और उसके साथ फिर से जुड़ने की आवश्यकता थी। इस मेल-मिलाप के लिए उनके अवज्ञा के पाप के लिए एक सिद्ध बलिदान की आवश्यकता होगी।

प्रश्न

1. परमेश्वर ने आदम को केवल एक ही निर्देश दिया था कि वह भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल न खाए।
सत्य _____ असत्य _____
2. आदम, फलस्वरूप समस्त मानवजाति, सृजा गया था एक _____ बिल्कुल भगवान की तरह।
बी _____ अन्य सभी जानवरों की तरह जो हवा में सांस लेते हैं।

3. Eve did not understand that she should not eat of the fruit of the tree of knowledge of good and evil.

True _____ False _____

4. Adam and Eve sinned because

A _____ they ate the forbidden fruit because they were starving.

B _____ the devil in the form of a serpent forced them to eat the forbidden fruit.

C _____ they disobeyed God by yielding to temptation and eating the forbidden fruit.

5. Since Eve ate of the forbidden fruit, Adam had no choice as God had made Eve for him.

True _____ False _____

Early Man

Lesson 2

Adam and Eve

Eve, knowing that God commanded them not to eat of the fruit of the tree of knowledge of good and evil, yielded to her desires, ate of the fruit and gave some to Adam and he also ate. The devil in the form of a serpent had enticed them to sin. This action of disobedience resulted in them being expelled from paradise, the Garden of Eden, and suffering other consequences of their sin. The consequences were separation from God, pain and death.

Their greatest pain may have been when one son, Cain, killed another son, Abel. Sin was present before the murder as Cain's heart was not pure and godly. Both Cain and Able offered sacrifices to God. But Cain became angry because Abel's offering to God was accepted and his was rejected.

Cain and Abel

In Hebrews 11:4 we read that Abel's offering was by faith. Now faith is based upon knowledge and love. So Abel's action and attitude pleased God whereas Cain's did not. God said of Cain's offering "if you do what is right, will you not be accepted? But if you do not do what is right, sin is crouching at your door; it desires to have you, but you must master it." (Genesis 4:7)

Therefore, it appears the object Cain offered was not acceptable or his attitude was unacceptable

सी _____ भगवान की समानता में।

3. हवा यह न समझ सकी कि भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल वह न खाए।

सत्य _____ असत्य _____

4. आदम और हवा ने पाप किया क्योंकि

ए _____ उन्होंने वर्जित फल खा लिया क्योंकि वे भूख से मर रहे थे।

बी _____ सर्प के रूप में शैतान ने उन्हें निषिद्ध फल खाने के लिए मजबूर किया।

ग _____ उन्होंने प्रलोभन के आगे झुककर और वर्जित फल खाकर परमेश्वर की अवज्ञा की।

5. चूँकि हवा ने वर्जित फल खा लिया, आदम के पास कोई विकल्प नहीं था क्योंकि परमेश्वर ने उसके लिए हवा को बनाया था।

सही गलत _____

आदि - मानव

पाठ 2

आदम और हवा

हवा यह जानकर कि परमेश्वर ने उन्हें भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल न खाने की आज्ञा दी है, उसकी अभिलाषाओं के आगे झुकी, और उस फल में से कुछ आदम को दिया और उसने भी खाया। साँप के रूप में शैतान ने उन्हें पाप के लिए बहकाया था। अवज्ञा के इस कार्य के परिणामस्वरूप उन्हें स्वर्ग, अदन की वाटिका से निष्कासित कर दिया गया, और उनके पाप के अन्य परिणाम भुगतने पड़े। परिणाम भगवान से अलगाव, दर्द और मृत्यु थे।

उनका सबसे बड़ा दर्द तब रहा होगा जब एक बेटे कैन ने दूसरे बेटे हाबिल को मार डाला। हत्या से पहले पाप मौजूद था क्योंकि कैन का हृदय शुद्ध और ईश्वरीय नहीं था। कैन और एबल दोनों ने परमेश्वर को बलिदान चढ़ाए। परन्तु कैन क्रोधित हो गया क्योंकि हाबिल की परमेश्वर को भेंट स्वीकार की गई और उसकी अस्वीकार कर दी गई।

कैन और एबल

इब्रानियों 11:4 में हम पढ़ते हैं कि हाबिल की भेंट विश्वास के द्वारा थी। अब विश्वास ज्ञान और प्रेम पर आधारित है। इसलिए हाबिल के कार्य और व्यवहार ने परमेश्वर को प्रसन्न किया जबकि कैन ने नहीं। परमेश्वर ने कैन की भेंट के बारे में कहा "यदि तुम वही करते हो जो सही है, तो क्या तुम्हें स्वीकार नहीं किया जाएगा? लेकिन यदि तुम वह नहीं करते जो सही है, तो पाप तुम्हारे

or both. He may have not offered the best he had, he may have offered something not authorized or he offered exactly what was required but with an attitude other than love of God. Whatever the situation, God was not pleased and Cain knew why. As punishment, the earth would not yield fruits for him and he would become a restless wanderer.

Noah

God told Noah what he must do to save the righteous people from perishing in the impending flood. No doubt these instructions appeared to be unusual but very explicit. Noah may have even questioned how a boat made only from one kind of wood exactly so long, wide and high with only one window and door could possibly save him and his family. However, he began building immediately warning others of the consequences of their rebellious and sinful lifestyle. In Hebrews 11:7 we read "By faith Noah, when warned about things not yet seen, in holy fear built an ark to save his family. By his faith he condemned the world and became heir of the righteousness that comes by faith."

Summary

So far in only six chapters of the first book of the Bible we have seen three situations where **people disobeyed God's commandments, substituting their own desires**; one disobeyed because it was pleasing to the eye and something to be desired to make them wise, one disobeyed by presenting an offering, an act of worship, that was not pleasing to God and one group disobeyed as the thoughts and intent of their mind was evil continually. **God was displeased** in every case, judging their actions against his standard, his Word. A righteous God, their creator, established the consequences He considered appropriate for their action.

Questions

1. Cain's offering was not acceptable because
A _____ it was a grain offering rather than an animal offering
B _____ Cain was not obedient thus sinned with his offering
C _____ he kept the best for himself
D _____ is not revealed
2. Noah followed God's plan exactly and did not substitute his own opinion for God's.
True ____ False ____

द्वार पर है; वह तुम्हें पाने की इच्छा रखता है, लेकिन तुम्हें उसमें महारत हासिल करनी चाहिए।" (उत्पत्ति 4:7)

इसलिए, ऐसा प्रतीत होता है कि कैन ने जिस वस्तु की पेशकश की वह स्वीकार्य नहीं थी या उसका रवैया अस्वीकार्य था या दोनों। हो सकता है कि उसने अपना सर्वश्रेष्ठ न दिया हो, हो सकता है कि उसने कुछ ऐसा दिया हो जो अधिकृत न हो या उसने ठीक वही दिया हो जिसकी आवश्यकता थी, लेकिन ईश्वर के प्रेम के अलावा अन्य दृष्टिकोण के साथ। स्थिति जो भी हो, परमेश्वर प्रसन्न नहीं था और कैन जानता था कि क्यों। सजा के रूप में, पृथ्वी उसके लिए फल नहीं देगी और वह एक बेचैन पथिक बन जाएगा।

नूह

परमेश्वर ने नूह को बताया कि उसे धर्मी लोगों को आसन्न जलप्रलय में नष्ट होने से बचाने के लिए क्या करना चाहिए। इसमें कोई शक नहीं कि ये निर्देश असामान्य लेकिन बहुत स्पष्ट थे। नूह ने शायद यह भी सवाल किया होगा कि केवल एक खिड़की और दरवाजे वाली इतनी लंबी, चौड़ी और ऊँची एक ही लकड़ी से बनी नाव उसे और उसके परिवार को कैसे बचा सकती है। हालाँकि, उसने दूसरों को उनकी विद्रोही और पापपूर्ण जीवन शैली के परिणामों के बारे में तुरंत चेतावनी देना शुरू कर दिया। इब्रानियों 11:7 में हम पढ़ते हैं, "विश्वास ही से नूह ने उन बातों के विषय में जो उस समय दिखाई न पड़ती थीं, चितौनी पाकर पवित्र भय से अपने घराने के उद्धार के लिथे एक जहाज बनाया। अपने विश्वास से उस ने जगत को दोषी ठहराया, और उस उस धार्मिकता का वारिस हुआ जो विश्वास से आती है।"

सारांश

अब तक बाइबल की पहली पुस्तक के केवल छह अध्यायों में हमने तीन स्थितियों को देखा है जहाँ लोगों ने अपनी इच्छाओं को प्रतिस्थापित करते हुए, परमेश्वर की आज्ञाओं की अवहेलना की; एक ने अवज्ञा की क्योंकि यह आंख को भाता था और उन्हें बुद्धिमान बनाने के लिए कुछ चाहा जाता था, एक ने भेंट चढ़ाकर अवज्ञा की, एक पूजा का कार्य, जो भगवान को प्रसन्न नहीं था और एक समूह ने उनके मन के विचारों और इरादे के रूप में अवज्ञा की थी लगातार बुराई। परमेश्वर हर मामले में अप्रसन्न था, उनके कार्यों को उसके स्तर, उसके वचन के विरुद्ध न्याय करते हुए। एक धर्मी परमेश्वर, उनके रचयिता ने, उनके कार्यों के लिए उपयुक्त समझे जाने वाले परिणामों को स्थापित किया।

प्रश्न

1. कैन की भेंट स्वीकार्य नहीं थी क्योंकि
A _____ यह पशुबलि के बजाय अनाज की भेंट थी
बी _____ कैन आज्ञाकारी नहीं था इस प्रकार उसकी भेंट के साथ पाप किया

3. Noah's faith was based upon
A _____ his feelings about what God wanted.

B _____ someone else's opinion of what God wanted.

C _____ knowledge of what God said He wanted.

4. God is displeased when those created in His likeness disobey.

True _____ False _____

5. There are no consequences for rebelling and disobeying God.

True _____ False _____

Their Choice

Lesson 3

Noah was a righteous man who obeyed God. By faith he built an ark saving mankind from annihilation. After the ark was completed Noah and his family entered the ark and God caused the animals that breathed air to come into the ark. After God closed the door, He opened the fountains of the deep and the windows of heaven to flood the earth. After days and months, the waters abated. Then Noah, his family and the animals came out of the ark.

Noah immediately built an altar, offered a sacrifice and worshipped God. This offering pleased God "The LORD smelled the pleasing aroma and said in his heart: 'Never again will I curse the ground because of man, even though every inclination of his heart is evil from childhood. And never again will I destroy all living creatures, as I have done. As long as the earth endures, seedtime and harvest, cold and heat, summer and winter, day and night will never cease.'" (Genesis 8:21-22) God also gave some instructions or commands (Genesis 9:3-7):

- Everything that lives and moves will be food for you
- Just as I gave you the green plants, I now give you everything,
- But you must not eat meat that has its lifeblood still in it.
- And for your lifeblood I will surely demand an accounting. I will demand an accounting from every animal. And from each man, too, I will

सी _____ उसने अपने लिए सर्वश्रेष्ठ रखा

डी _____ प्रकट नहीं होता है

2. नूह ने परमेश्वर की योजना का ठीक-ठीक पालन किया और परमेश्वर की राय के स्थान पर अपनी राय को प्रतिस्थापित नहीं किया।

सही गलत _____

3. नूह के विश्वास पर आधारित था

A _____ परमेश्वर जो चाहता था उसके बारे में उसकी भावनाएँ।

B _____ किसी और की राय है कि भगवान क्या चाहते हैं।

C _____ परमेश्वर ने जो कहा, उसका ज्ञान वह चाहता था।

4. परमेश्वर अप्रसन्न होता है जब उसकी समानता में सृजे गए उसकी अवज्ञा करते हैं।

सही गलत _____

5. परमेश्वर से विद्रोह करने और उसकी अवज्ञा करने का कोई परिणाम नहीं होता है।

सही गलत _____

उनकी पसंद

अध्याय 3

नूह एक धर्मी व्यक्ति था जिसने परमेश्वर की आज्ञा मानी। विश्वास से उसने मानव जाति को विनाश से बचाने के लिए एक जहाज बनाया। सन्दूक के पूरा होने के बाद नूह और उसका परिवार सन्दूक में प्रवेश किया और परमेश्वर ने हवा में सांस लेने वाले जानवरों को सन्दूक में आने दिया। जब परमेश्वर ने दरवाजा बंद किया, तो उसने धरती पर बाढ़ लाने के लिए गहरे पानी के फव्वारे और स्वर्ग की खिड़कियां खोल दीं। दिनों और महीनों के बाद, पानी कम हो गया। तब नूह, उसका परिवार और पशु सन्दूक में से निकले।

नूह ने तुरंत एक वेदी बनाई, बलिदान चढ़ाया और परमेश्वर की उपासना की। इस भेंट ने परमेश्वर को प्रसन्न किया "यहोवा ने मनभावन सुगन्ध को सूँघकर अपने मन में कहा, 'मनुष्य के कारण मैं फिर कभी भूमि को शाप न दूंगा, चाहे उसके मन में बचपन से ही सब कुछ बुरा हो। और जैसा मैं ने किया है, वैसा फिर कभी मैं सब प्राणियोंको नाश न करूंगा। जब तक पृथ्वी टिकती है, बीज का समय और फसल, ठंड और गर्मी, गर्मी और सर्दी, दिन और रात कभी खत्म नहीं होंगे।" (उत्पत्ति 8:21-22) परमेश्वर ने कुछ निर्देश या आज्ञाएँ भी दीं (उत्पत्ति 9:3-7):

- जो कुछ भी रहता है और चलता है वह आपके लिए भोजन होगा
- जैसे मैंने तुम्हें हरे पौधे दिए, वैसे ही अब मैं तुम्हें सब कुछ देता हूँ,
- परन्तु जिस मांस में उसका जीवन रक्त हो, वह मांस न खाना।

demand an accounting for the life of his fellow man.

- Whoever sheds the blood of man, by man shall his blood be shed; for in the image of God has God made man.
- As for you, be fruitful and increase in number; multiply on the earth and increase upon it.

God then established a covenant with Noah and every living creature.

Sin knocked at the door again as Ham showed disrespect for his father whereupon he was cursed to become a slave to his brothers.

In Romans 1:28-32 "Furthermore, since they did not think it worthwhile to retain the knowledge of God, he gave them over to a depraved mind, to do what ought not to be done. They have become filled with every kind of wickedness, evil, greed and depravity. They are full of envy, murder, strife, deceit and malice. They are gossips, slanderers, God-haters, insolent, arrogant and boastful; they invent ways of doing evil; they disobey their parents; they are senseless, faithless, heartless, ruthless. Although they know God's righteous decree that those who do such things deserve death, they not only continue to do these very things but also approve of those who practice them." Note the parallel in Noah's time and our situation:

a. The people were sinful and we are sinners – Romans 3:23 "for all have sinned and fall short of the glory of God."

b. They were about to die and we may also – John 8:24a "I told you that you would die in your sins."

c. Noah was told what to do to save the righteous and so have we - John 8:24b "if you do not believe that I [Jesus] am [the Christ, the Son of God], you will indeed die in your sins."

d. All the people of Noah's time had a choice to make and we also have a choice – 2 Corinthians 6:2b "I tell you, **now is**

the time of God's favor, now is the day of salvation."

Questions

1. Noah was considered righteous because he built an ark and saved mankind.

True _____ False _____

• और तुम्हारे जीवन-रक्त का लेखा-जोखा अवश्य माँगूंगा। मैं हर जानवर से हिसाब माँगूंगा। और हर एक मनुष्य से मैं भी उसके संगी मनुष्य के प्राण का लेखा-जोखा माँगूंगा।

• जो कोई मनुष्य का लोहू बहाए उसका लोहू मनुष्य के द्वारा बहाया जाए; क्योंकि परमेश्वर ने मनुष्य को परमेश्वर के स्वरूप के अनुसार बनाया है।

• जहाँ तक आपकी बात है, फलदायी बनो और संख्या में वृद्धि करो; पृथ्वी पर गुणा करो और उस पर बढ़ो।

तब परमेश्वर ने नूह और सभी जीवित प्राणियों के साथ एक वाचा स्थापित की।

पाप ने फिर से दरवाजा खटखटाया क्योंकि हाम ने अपने पिता के प्रति अनादर दिखाया जिसके बाद उसे अपने भाइयों का दास बनने का श्राप मिला।

रोमियों 1:28-32 में "और जब उन्होंने परमेश्वर के ज्ञान को बनाए रखना उचित नहीं समझा, तो उसने उन्हें भ्रष्ट मन के हवाले कर दिया, कि वह करें जो नहीं करना चाहिए। वे हर प्रकार की दुष्टता, बुराई, लोभ और भ्रष्टता से भर गए हैं। वे ईर्ष्या, हत्या, कलह, छल और द्वेष से भरे हुए हैं। वे गपशप करनेवाले, निन्दक करनेवाले, परमेश्वर से बैर रखनेवाले, ठीठ, अभिमान और घमण्डी हैं; वे बुराई करने के तरीके ईजाद करते हैं; वे अपने माता-पिता की अवज्ञा करते हैं; वे संवेदनहीन, विश्वासहीन, हृदयहीन, निर्दयी हैं। यद्यपि वे परमेश्वर के उस धर्मी आदेश को जानते हैं कि जो ऐसे काम करते हैं वे मृत्यु के योग्य हैं, वे न केवल यही काम करते रहते हैं, वरन् उन पर चलनेवालों को भी प्रसन्न करते हैं।" नूह के समय और हमारी स्थिति में समानता पर ध्यान दें:

एक। लोग पापी थे और हम पापी हैं - रोमियों 3:23 "क्योंकि सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।"

बी। वे मरने वाले थे और हम भी हो सकते हैं - यूहन्ना 8:24क "मैंने तुमसे कहा था कि तुम अपने पापों में मरोगे।"

सी। नूह को बताया गया था कि धर्मियों को बचाने के लिए क्या करना चाहिए और हमने भी ऐसा ही किया है - यूहन्ना 8:24बी "यदि तुम विश्वास नहीं करते कि मैं [यीशु] [मसीह, परमेश्वर का पुत्र] हूँ, तो तुम अपने पापों में मरोगे।"

डी। नूह के समय के सभी लोगों के पास चुनने के लिए एक विकल्प था और हमारे पास एक विकल्प भी है - 2 कुरिन्थियों 6:2ब "मैं तुमसे कहता हूँ, अब है भगवान की कृपा का समय, अब मोक्ष का दिन है।"

प्रश्न

1. नूह को धर्मी माना गया क्योंकि उसने एक जहाज बनाया और मानव जाति को बचाया।

2. When is an acceptable time for one's salvation?

A _____ After one has sown their wild oats.

B _____ When time pressures are not so great

C _____ There is no time like the present.

3. What happens when people refuse to retain God in their knowledge?

A _____ It is never too late to accept God's call.

B _____ Time will mellow the heart creating a desire for knowledge of Him.

C _____ God gives them over to their desires.

4. Following Noah's worship to God, God promised to never again destroy all living creatures by water.

True _____ False _____

5. Those who do not believe Jesus is the Christ will die in their sins

True _____ False _____

God's Promises

Lesson 4

Years following the temptation of Adam and Eve and their yielding to their desires rather than obeying God, two hundred ninety years following the flood and hundreds of years before God gave Moses the Commandments on Stone, Terah became the father of Abram. After becoming an adult, God made a promise to Abram. "The LORD had said to Abram, 'Leave your country, your people and your father's household and go to the land I will show you. I will make you into a great nation and I will bless you; I will make your name great, and you will be a blessing. I will bless those who bless you, and whoever curses you I will curse; **all peoples on earth will be blessed through you**.'" (Genesis 12:1-3) God changed Abram's name to Abraham when He established His covenant with him. So, Abraham left his home and went to Canaan.

In Hebrews 11 we read, "By faith he made his home in the promised land like a stranger in a foreign country; he lived in tents, as did Isaac and Jacob, who were heirs with him of the same

सही गलत _____

2. किसी के उद्धार के लिए स्वीकार्य समय कब है?

A _____ के बाद एक ने अपने जंगली जई बोए हैं।

बी _____ जब समय का दबाव इतना अधिक नहीं होता है

C _____ वर्तमान जैसा कोई समय नहीं है।

3. क्या होता है जब लोग अपने ज्ञान में परमेश्वर को बनाए रखने से इनकार करते हैं?

ए _____ भगवान के बुलावे को स्वीकार करने में कभी देर नहीं होती।

बी _____ समय उनके ज्ञान की इच्छा पैदा करते हुए हृदय को मधुर बना देगा।

सी _____ भगवान उन्हें उनकी इच्छाओं के लिए देता है।

4. परमेश्वर के लिए नूह की आराधना के बाद, परमेश्वर ने वादा किया कि वह फिर कभी पानी से सभी जीवित प्राणियों को नष्ट नहीं करेगा।

सही गलत _____

5. जो लोग यीशु को मसीह नहीं मानते, वे अपने पापों में मरेंगे

सही गलत _____

भगवान के वादे

पाठ 4

आदम और हव्वा के प्रलोभन के वर्षों बाद और परमेश्वर की आज्ञा मानने के बजाय उनकी इच्छाओं के प्रति समर्पण, बाढ़ के दो सौ नब्बे साल बाद और सैकड़ों साल पहले परमेश्वर ने मूसा को पत्थर पर आज्ञाएँ दीं, तेरह अब्राहम का पिता बन गया। वयस्क होने के बाद, परमेश्वर ने अब्राहम से एक प्रतिज्ञा की। "यहोवा ने अब्राहम से कहा था, अपक्की प्रजा और पिता के घराने को छोड़कर उस देश में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊंगा। मैं तुझे एक बड़ी जाति बनाऊंगा, और तुझे आशीष दूंगा; मैं तेरा नाम बड़ा करूंगा, और तू आशीष का कारण होगा। जो तुझे आशीर्वाद देँ उन्हें मैं आशीष दूंगा, और जो तुझे शाप देँ, उसे मैं शाप दूंगा; पृथ्वी के सब लोग तेरे द्वारा आशीष पाएंगे।" (उत्पत्ति 12:1-3) परमेश्वर ने अब्राहम का नाम बदलकर इब्राहीम कर दिया जब उसने उसके साथ अपनी वाचा स्थापित की। इसलिए इब्राहीम अपना घर छोड़कर कनान चला गया।

इब्रानियों 11 में हम पढ़ते हैं, "विश्वास ही से उस ने प्रतिज्ञा किए हुए देश में परदेशी के समान अपना ठिकाना बनाया; वह इसहाक और याकूब की नाईं डेरे में रहा, जो उसी प्रतिज्ञा के वारिस थे। नीव के साथ शहर के लिए

promise. For he was looking forward to the city with foundations, whose architect and builder is God." (Vs. 8-10) It should be clear that **God's promise to Abraham was to all mankind rather than to one nation.**

Abraham and Sarah, his wife, were childless even though God had promised they would have many descendants. They became impatient for God to fulfill his promise of a son. Using human reason, they took matters into their own hands. Their impatient action caused great conflicts later between Ishmael's descendants, Abraham's first born by Sarah's handmaid, and those of Isaac, Abraham's and Sarah's son of promise. God waited until it was physically impossible for Abraham and Sarah to have a child so when they did have one there would be no doubt that it was a direct result of God's promise and their faith. (Hebrews 11:11-12)

Abraham became the father of many nations and known as the father of the faithful, but he was not without sin. He lied on more than one occasion. When confronted by God he repented and put his faith and trust in Him. It is through descendants of Abraham, Isaac and Jacob that a savior would come into the world to redeem the obedient faithful.

"When Abram was ninety-nine years old, the LORD appeared to him and said, 'I am God Almighty; walk before me and be blameless. I will confirm my covenant between me and you and will greatly increase your numbers.'" (Genesis 17:1-2) The covenant was sealed by Abraham's obedience to God's command to circumcise all males. This was before they had any children and hundreds of years before the Law was given to Moses. About a year later Isaac was born and Abraham circumcised him on the eighth day according to the covenant.

Later, when Isaac was older, God commanded Abraham to offer Isaac as a burnt offering sacrifice. This was a test of Abraham's faith. Abraham reasoned that since God gave him Isaac when it was physically impossible for him and Sarah to have a son then He could bring Isaac back from the dead in order to fulfill his promise.

What is so significant about this relationship between God and Abraham? First and foremost

आगे, जिसका वास्तुकार और निर्माता भगवान है।" (बनाम 8-10) यह स्पष्ट होना चाहिए कि इब्राहीम के लिए परमेश्वर का वादा एक राष्ट्र के बजाय सभी मानव जाति के लिए था।

इब्राहीम और सारा, उसकी पत्नी, निःसंतान थे, हालाँकि परमेश्वर ने वादा किया था कि उनके कई वंशज होंगे। वे परमेश्वर के लिए अपने बेटे के वादे को पूरा करने के लिए अधीर हो गए। मानवीय तर्क का प्रयोग करते हुए, उन्होंने मामलों को अपने हाथों में ले लिया। उनकी अधीर कार्रवाई ने बाद में इश्माएल के वंशजों, सारा की दासी द्वारा पैदा हुए अब्राहम के पहले, और इसहाक, इब्राहीम और सारा के वादे के पुत्र के बीच महान संघर्ष का कारण बना। परमेश्वर ने तब तक प्रतीक्षा की जब तक कि अब्राहम और सारा के लिए एक बच्चा पैदा करना शारीरिक रूप से असंभव था, इसलिए जब उनके पास एक बच्चा होगा तो इसमें कोई संदेह नहीं होगा कि यह परमेश्वर की प्रतिज्ञा और उनके विश्वास का प्रत्यक्ष परिणाम था। (इब्रानियों 11:11-12)

इब्राहीम कई राष्ट्रों का पिता बन गया और विश्वासियों के पिता के रूप में जाना जाता है, लेकिन वह पाप से रहित नहीं था। उसने एक से अधिक अवसरों पर झूठ बोला। जब परमेश्वर से उसका सामना हुआ तो उसने पश्चाताप किया और उस पर अपना विश्वास और भरोसा रखा। यह इब्राहीम, इसहाक और याकूब के वंशजों के माध्यम से है कि आज्ञाकारी विश्वासियों को छुड़ाने के लिए एक उद्धारकर्ता दुनिया में आएगा।

"जब अब्राहम नब्ब्यानवे वर्ष का हुआ, तब यहोवा ने उसे दर्शन देकर कहा, कि मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूँ; मेरे साम्हने चल और निर्दोष बन। (उत्पत्ति 17:1-2) सभी पुरुषों का खतना करने की परमेश्वर की आज्ञा के प्रति इब्राहीम की आज्ञाकारिता के द्वारा वाचा पर मुहर लगा दी गई। इससे पहले कि उनके कोई बच्चे थे और मूसा को कानून दिए जाने से सैकड़ों साल पहले। लगभग एक वर्ष के बाद इसहाक का जन्म हुआ और इब्राहीम ने वाचा के अनुसार आठवें दिन उसका खतना किया।

बाद में, जब इसहाक बड़ा हुआ, तो परमेश्वर ने इब्राहीम को इसहाक को होमबलि के रूप में चढ़ाने की आज्ञा दी। यह अब्राहम के विश्वास की परीक्षा थी। इब्राहीम ने तर्क दिया कि चूँकि परमेश्वर ने उसे इसहाक दिया था, जब उसके और सारा के लिए एक बेटा होना शारीरिक रूप से असंभव था, तो वह अपने वादे को पूरा करने के लिए इसहाक को मृतकों में से वापस ला सकता था।

परमेश्वर और अब्राहम के बीच इस संबंध के बारे में इतना महत्वपूर्ण क्या है? सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण परमेश्वर को आज्ञाकारी विश्वासयोग्यता की आवश्यकता है। इब्राहीम के विश्वास के माध्यम से मनुष्य को उसके साथ मेल-मिलाप करने का मार्ग प्रदान करने की परमेश्वर की प्रतिज्ञा की शुरुआत

God requires obedient faithfulness. Through Abraham's faith God's promise to provide a way for man to be reconciled to Him was initiated. It would not be realized until years later when Jesus of Nazareth, through complete obedient faithfulness, would offer himself as the atoning sacrifice for man's sins. It was through Isaac, **the son of promise**, not Ishmael his first born, that the covenant would be continued as Jesus was a descendant of Isaac through David.

It was **God's promise** that through Abraham all peoples of the earth would be blessed. Therefore, **there is no way mankind can earn his reconciliation. It is a promise and matter of attitude, faith and obedience to Jesus, the Christ, His Word, the Message of Reconciliation.**

It should not be so amazing that **God blesses the faithful obedient and disinherits the rebellious disobedient.**

Questions

1. God's promise to Abraham that his descendant would bless all mankind was given
A ____ following the giving of the Ten Commandants.
B ____ at the time Abraham offered Isaac as a sacrifice to God.
C ____ while with his father, Terah, prior to going to Canaan.
2. God's covenant with Abraham was based upon Abraham's willingness to put his trust in God.
True ____ False ____
3. God spared Isaac's physical life because of Abraham's faith and obedience.
True ____ False ____
4. Abraham was referred to as the father of the faithful because he trusted God.
True ____ False ____
5. God is faithful in keeping His promises.
True ____ False ____

Grievous Sin

हुई। यह तब तक महसूस नहीं होगा जब तक कि वर्षों बाद नासरत का यीशु, पूरी आज्ञाकारी विश्वासयोग्यता के माध्यम से, स्वयं को मनुष्य के पापों के प्रायश्चित्त बलिदान के रूप में पेश करेगा। यह प्रतिज्ञा के पुत्र इसहाक के माध्यम से था, न कि उसका पहला जन्म इश्माएल, कि वाचा को जारी रखा जाएगा क्योंकि यीशु दाऊद के माध्यम से इसहाक का वंशज था।

यह परमेश्वर की प्रतिज्ञा थी कि इब्राहीम के द्वारा पृथ्वी के सभी लोग आशीष पाएंगे। इसलिए, ऐसा कोई तरीका नहीं है जिससे मानव जाति अपना मेल-मिलाप अर्जित कर सके। यह यीशु, मसीह, उनके वचन, सुलह का संदेश के प्रति दृष्टिकोण, विश्वास और आज्ञाकारिता का एक वादा और मामला है।

यह इतना आश्चर्यजनक नहीं होना चाहिए कि परमेश्वर वफादार आज्ञाकारी को आशीर्वाद दे और विद्रोही अवज्ञाकारियों को वंचित कर दे।

प्रश्न

1. इब्राहीम को परमेश्वर की प्रतिज्ञा दी गई थी कि उसका वंशज समस्त मानवजाति को आशीष देगा
ए ____ दस कमांडेंट देने के बाद।
बी ____ उस समय इब्राहीम ने इसहाक को भगवान को बलिदान के रूप में पेश किया था।
सी ____ कनान जाने से पहले अपने पिता तेरह के साथ।
2. अब्राहम के साथ परमेश्वर की वाचा अब्राहम की परमेश्वर पर भरोसा करने की इच्छा पर आधारित थी।
सही गलत ____
3. इब्राहीम के विश्वास और आज्ञाकारिता के कारण परमेश्वर ने इसहाक के भौतिक जीवन को बखशा।
सही गलत ____
4. इब्राहीम को विश्वासयोग्य के पिता के रूप में संदर्भित किया गया था क्योंकि उसने परमेश्वर पर भरोसा किया था।
सही गलत ____
5. परमेश्वर अपने वादों को पूरा करने में विश्वासयोग्य है।
सही गलत ____

गंभीर पाप

Because of problems between herdsmen of Abraham and Lot, his nephew, Abraham allowed Lot to choose his land and Abraham would take another area. Lot chose the better area near the city of Sodom.

"And the LORD said, 'Because the outcry against Sodom and Gomorrah is great, and because their sin is very grave, I will go down now and see whether they have done altogether according to the outcry against it that has come to Me; and if not, I will know.'" (Genesis 18:20-21) Before God sent angels to destroy Sodom, He revealed His plans to Abraham who pleaded with God to save Sodom because of righteous people living there. But there were so few. So God's angels in the form of men appeared at evening entering the city of Sodom. When Lot saw these visitors, he insisted they enter his house under his protection.

The wickedness of Sodom is clearly seen in the following; "Now before they lay down, the men of the city, the men of Sodom, both old and young, all the people from every quarter, surrounded the house. And they called to Lot and said to him, 'Where are the men who came to you tonight? Bring them out to us that we may know them carnally.' So Lot went out to them through the doorway, shut the door behind him, and said, 'Please, my brethren, do not do so wickedly! 'See now, I have two daughters who have not known a man; please, let me bring them out to you, and you may do to them as you wish; only do nothing to these men, since this is the reason they have come under the shadow of my roof.' And they said, 'Stand back!' Then they said, 'This one came in to stay here, and he keeps acting as a judge; now we will deal worse with you than with them.' So they pressed hard against the man Lot, and came near to break down the door. But the angels reached out their hands and pulled Lot into the house with them, and shut the door." (Genesis 19:4-10) The angels explained to Lot the purpose of their mission so "When the morning dawned, the angels urged Lot to hurry, saying, 'Arise, take your wife and your two daughters who are here, lest you be consumed in the punishment of the city.'"... "'Hurry, escape there. For I cannot do anything until you arrive there.' The sun had risen upon the earth when Lot entered Zoar. Then the LORD rained brimstone and fire on

इब्राहीम के चरवाहों और लूत, उसके भतीजे, इब्राहीम के बीच समस्याओं के कारण, इब्राहीम ने लूत को अपनी भूमि चुनने की अनुमति दी और इब्राहीम एक और क्षेत्र ले लेगा। लूत ने सदोम नगर के निकट के उत्तम क्षेत्र को चुना।

"और यहोवा ने कहा, सदोम और अमोरा के विरुद्ध बड़ी चिल्लाहट, और उनका पाप बहुत बड़ा है, इसलिये मैं अब नीचे जाकर देखूंगा, कि जो चिल्लाहट मेरे पास आई है उसके अनुसार उन्होंने ठीक वैसा ही किया है या नहीं; और नहीं तो मुझे पता चल जाएगा।" (उत्पत्ति 18:20-21) इससे पहले कि परमेश्वर ने सदोम को नष्ट करने के लिए स्वर्गदूतों को भेजा, उसने अपनी योजनाओं को इब्राहीम के सामने प्रकट किया जिसने परमेश्वर से सदोम को बचाने की याचना की क्योंकि वहां धर्मी लोग रहते थे। लेकिन इतने कम थे। सो परमेश्वर के दूत मनुष्यों के रूप में सांझ को सदोम नगर में प्रवेश करते हुए दिखाई दिए। जब लूत ने इन आगंतुकों को देखा, तो उसने जोर देकर कहा कि वे उसकी सुरक्षा में उसके घर में प्रवेश करें।

सदोम की दुष्टता निम्नलिखित में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है; "उनके लेटने से पहिले, नगर के पुरुषों, क्या सदोम के पुरुषों, क्या बूढ़े क्या जवान, क्या चारोंओर के सब लोगों ने भवन को घेर लिया, और लूत को बुलाकर उस से कहने लगे, कि वे पुरुष कहां हैं जो क्या तुम आज रात को तुम्हारे पास आए थे? उन्हें हमारे पास बाहर ले आओ कि हम उन्हें शारीरिक रूप से जान सकें।" तब लूत द्वार से होकर उनके पास गया, और उसके पीछे का द्वार बन्द करके कहा, हे मेरे भाइयो, ऐसी दुष्टता न कर! 'देख, मेरी दो बेटियाँ हैं, जो किसी पुरुष को नहीं जानतीं; कृपया, मैं उन्हें तेरे पास बाहर ले आऊंगा, और तू उनके साथ जैसा चाहे वैसा ही कर सकता है; केवल इन आदमियों से कुछ न करना, क्योंकि इसी कारण वे मेरी छत की छाया में आए हैं।' और उन्होंने कहा, 'पीछे खड़े हो जाओ!' तब उन्होंने कहा, यह तो यहां रहने आया, और न्यायी का काम करता है; अब हम उनके साथ तुम्हारे साथ और भी बुरा व्यवहार करेंगे।' तब उन्होंने लूत को बहुत दबाया, और द्वार तोड़ने के लिथे निकट आए। परन्तु स्वर्गदूतों ने हाथ बढ़ाकर लूत को अपने साथ घर में खींच लिया, और द्वार बन्द कर लिया।" (उत्पत्ति 19:4-10) स्वर्गदूतों ने लूत को अपने मिशन का उद्देश्य समझाया ताकि "जब भोर हुई, तो स्वर्गदूतों ने बहुत जल्दी करने के लिए, यह कहते हुए, 'उठ, अपनी पत्नी और अपनी दो बेटियों को ले जो यहाँ हैं, ऐसा न हो कि तुम शहर की सजा में भस्म हो जाओ।'... "जल्दी करो, वहाँ भाग जाओ। क्योंकि जब तक तुम कुछ नहीं कर सकते, तब तक मैं कुछ नहीं कर सकता। वहाँ पहुँचो।' जब लूत सोअर में आया, तब सूर्य पृथ्वी पर उदय हुआ था, तब यहोवा ने सदोम और अमोरा पर यहोवा की ओर से आकाश पर से गन्धक और आग बरसा दी, सो उस ने उन नगरोंको, अर्थात् तराई में, और नगरोंके सब रहनेवालोंको उलट दिया, और जमीन पर उग आया।" (उत्पत्ति 19:

Sodom and Gomorrah from the LORD out of the heavens. So He overthrew those cities, all the plain, all the inhabitants of the cities, and what grew on the ground." (Genesis 19:15, 23-25)

God removed Adam and Eve from the Garden of Eden because of disobedience, destroyed by water all people because of the wickedness of man and the evil intent of his heart (mind) except Noah, his family and selected animals. Now He destroyed Sodom by fire because of grievous wickedness. **It should be evident that disobedience and wickedness is not tolerated by God and those who practice such will also be destroyed unless they turn from their wickedness and obey the will of God.**

Questions

1. What sin was so great that God decided to destroy Sodom?
A ___ Abortion
B ___ Devil worship
C ___ Homosexuality
2. Lot chose the land east of Jordan because
A ___ he desired the city life offered by Sodom and Gomorrah.
B ___ he and Abraham as they constantly argued.
C ___ the land appeared to be the better land.
D ___ The Bible does not say.
3. Disobedience to God caused problems
A ___ in the Garden of Eden.
B ___ with the people in Noah's time.
C ___ in the cities of Sodom and Gomorrah.
D ___ all the above.
4. The destruction of the area around Sodom and Gomorrah only affected the men who attempted to defile the men [angels] visiting Lot.
True ___ False ___
5. Abraham pleaded with God to save the cities of Sodom and Gomorrah because of righteous people living in these cities.
True ___ False ___

Slavery

Lesson 6

God called Abraham while he was living in Ur of the Chaldees to go to a far country. He had no

परमेश्वर ने आदम और हव्वा को अवज्ञा के कारण अदन की वाटिका से हटा दिया, नूह, उसके परिवार और चुने हुए जानवरों को छोड़कर मनुष्य की दुष्टता और उसके दिल (मन) के बुरे इरादे के कारण सभी लोगों को पानी से नष्ट कर दिया। अब उसने घोर दुष्टता के कारण सदोम को आग से नष्ट कर दिया। यह स्पष्ट होना चाहिए कि परमेश्वर द्वारा अवज्ञा और दुष्टता को सहन नहीं किया जाता है और जो लोग ऐसा करते हैं वे भी नष्ट हो जाएंगे जब तक कि वे अपनी दुष्टता से नहीं हटते और परमेश्वर की इच्छा का पालन नहीं करते।

प्रश्न

1. कौन सा पाप इतना बड़ा था कि परमेश्वर ने सदोम को नष्ट करने का फैसला किया?
ए ___ गर्भपात
बी ___ शैतान पूजा
सी ___ समलैंगिकता
2. लूत ने यरदन के पूर्व के देश को इसलिये चुना कि
ए ___ वह सदोम और अमोरा द्वारा पेश किए गए शहर के जीवन को चाहता था।
बी ___ वह और अब्राहम जैसा कि उन्होंने लगातार तर्क दिया।
सी ___ भूमि बेहतर भूमि प्रतीत होती है।
डी ___ बाइबिल नहीं कहता है।
3. परमेश्वर की आज्ञा न मानने से समस्याएँ पैदा हुईं
ए ___ ईडन गार्डन में।
बी ___ नूह के समय में लोगों के साथ।
सी ___ सदोम और अमोरा के शहरों में।
डी ___ उपरोक्त सभी।
4. सदोम और अमोरा के आसपास के क्षेत्र के विनाश ने केवल उन पुरुषों को प्रभावित किया जिन्होंने लूत के पास आने वाले पुरुषों [स्वर्गदूतों] को अशुद्ध करने का प्रयास किया था।
सही गलत ___
5. इब्राहीम ने परमेश्वर से बिनती की कि इन नगरों में धर्मी लोगों के रहने के कारण सदोम और अमोरा के नगरों को बचा ले।
सही गलत ___

गुलामी

पाठ 6

परमेश्वर ने इब्राहीम को कसदियों के ऊर में रहने के दौरान दूर देश में जाने के लिए बुलाया। उसके पास घर बुलाने के लिए कोई जगह नहीं थी; केवल एक वादा कि उसके वंशजों के पास एक दिन एक घर होगा। इब्राहीम के वंशज

place to call home; only a promise that his descendants would one day have a home. Abraham's descendants would ultimately become Egyptian slaves. God through Moses delivered them from slavery to go to the land of their inheritance, the land where Abraham wandered. This is very similar to our short stay here on earth amid wickedness being slaves to sin. God through Christ will deliver us from slavery of sin to a home in Heaven.

Their journey into that far country, Egypt, began with a cowardly act by Jacob's sons to a younger brother, Joseph, when they sold him to a band of Ishmaelites, descendants of Abraham's first born son. They sold him as a common slave and then deceived Jacob into believing Joseph had been killed by a wild animal. Remember, Jacob had also deceived his father in order to receive a blessing. Joseph remained faithful to God and God used him in his plan to create a mighty nation from Abraham's descendants. This would occur after years of slavery among a people who worshipped created things rather than Almighty God.

After four hundred years in Egypt Moses was born. His parents defied Pharaoh's edicts to kill the baby and they hid him. They acted righteously by their willingness to disobey Pharaoh's command rather than disobey God's. "By faith Moses' parents hid him for three months after he was born, because they saw he was no ordinary child, and they were not afraid of the king's edict." (Hebrews 11:23) Moses was found by Pharaoh's daughter who had compassion on him. Moses' sister summoned her mother and "Pharaoh's daughter said to her, 'Take this baby and nurse him for me, and I will pay you.' So the woman took the baby and nursed him. When the child grew older, she took him to Pharaoh's daughter and he became her son. She named him Moses, saying, 'I drew him out of the water.'" (Exodus 2:9-10)

In Hebrews 11: 24-27 we read "By faith Moses, when he had grown up, refused to be known as the son of Pharaoh's daughter. He chose to be mistreated along with the people of God rather than to enjoy the pleasures of sin for a short time. He regarded disgrace for the sake of Christ as of greater value than the treasures of Egypt, because he was looking ahead to his reward. By

अंततः मिस्र के दास बन जाएंगे। परमेश्वर ने मूसा के द्वारा उन्हें दासता से छुड़ाया, कि वे उनके निज भाग के देश में जाएं, जहां इब्राहीम फिरता था। यह बहुत कुछ वैसा ही है जैसे कि दुष्टता के पाप के दास होने के कारण पृथ्वी पर हमारे यहाँ अल्प प्रवास। मसीह के द्वारा परमेश्वर हमें पाप की दासता से स्वर्ग में एक घर में पहुंचाएगा।

उस सुदूर देश, मिस्र में उनकी यात्रा, याकूब के पुत्रों द्वारा एक छोटे भाई, यूसुफ से कायरतापूर्ण कार्य के साथ शुरू हुई, जब उन्होंने उसे इब्राहीम के पहले बेटे के वंशज इश्माएलियों के एक समूह को बेच दिया। उन्होंने उसे एक सामान्य दास के रूप में बेच दिया और फिर याकूब को यह विश्वास दिलाने के लिए धोखा दिया कि यूसुफ को एक जंगली जानवर ने मार डाला था। याद रखिए, याकूब ने भी आशीष पाने के लिए अपने पिता को धोखा दिया था। यूसुफ परमेश्वर के प्रति वफादार रहा और परमेश्वर ने उसे अपनी योजना में इब्राहीम के वंशजों से एक शक्तिशाली राष्ट्र बनाने के लिए इस्तेमाल किया। यह उन लोगों के बीच वर्षों की गुलामी के बाद होगा जो सर्वशक्तिमान परमेश्वर के बजाय सृष्ट वस्तुओं की पूजा करते थे।

मिस्र में चार सौ वर्ष के बाद मूसा का जन्म हुआ। उसके माता-पिता ने बच्चे को मारने के लिए फिरौन के आदेशों की अवहेलना की और उन्होंने उसे छिपा दिया। उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा न मानने के बजाय फिरौन की आज्ञा का उल्लंघन करने की अपनी इच्छा के द्वारा नेक काम किया। "विश्वास ही से मूसा के माता-पिता ने उसके जन्म के तीन महीने बाद तक उसे छिपा रखा, क्योंकि उन्होंने देखा कि वह कोई साधारण बच्चा नहीं है, और वे राजा के आदेश से नहीं डरते थे।" (इब्रानियों 11:23) मूसा को फिरौन की बेटी ने पाया, जिसने उस पर दया की थी। मूसा की बहिन ने अपनी माता को बुलवा भेजा, और फिरौन की बेटी ने उस से कहा, इस बालक को लेकर मेरे लिये उसका पालन-पोषण कर, और मैं तुझे चुका दूंगी। तब उस स्त्री ने बच्चे को लेकर उसका पालन-पोषण किया: जब बच्चा बड़ा हो गया, तो उसे फिरौन की बेटी के पास ले गई, और वह उसका पुत्र हुआ: उसने उसका नाम मूसा रखा, और कहा, 'मैंने उसे पानी से निकाला है'। (निर्गमन 2:9-10)

इब्रानियों 11:24-27 में हम पढ़ते हैं, "विश्वास ही से मूसा ने बड़ा होने पर फिरौन की बेटी का पुत्र कहलाने से इन्कार किया। उसने पाप के सुखों का आनंद लेने के बजाय परमेश्वर के लोगों के साथ दुर्व्यवहार करना चुना। थोड़े समय के लिए। उसने मसीह के लिए अपमान को मिस्र के खजाने की तुलना में अधिक मूल्यवान माना, क्योंकि वह अपने इनाम की प्रतीक्षा कर रहा था। विश्वास से वह राजा के क्रोध से नहीं डरता, मिस्र छोड़ दिया; वह दृढ़ रहा क्योंकि उसने उसे देखा था जो अदृश्य है।" चालीस वर्षों तक मिस्रियों के सभी तरीकों में प्रशिक्षित होने के बाद, परमेश्वर ने मूसा को एक चरवाहे के रूप में

faith he left Egypt, not fearing the king's anger; he persevered because he saw him who is invisible." After being trained in all the ways of the Egyptians for forty years, God trained Moses another forty years as a herdsman before calling him to lead Abraham's descendants from the bondage of slavery to the land promised long ago to Abraham, Isaac and Jacob.

Because of these former slaves' lack of faith and obedience, it took forty years before they were ready to obey and claim their promised land. Even though this land was given to them by God's grace they had to fight God's enemies to inhabit it.

Today mankind is under the bondage of sin. We are freed from the bondage of sin by the blood of Christ. It takes continued obedience and faithfulness for us to reach Heaven, our promised land, while always fighting the enemies of God.

Questions

1. Moses was born a slave but became grandson of Pharaoh, ruler of all Egypt.
True _____ False _____
2. Moses chose not to continue being Pharaoh's grandson
A _____ because Pharaoh was partial to other grandchildren
B _____ because Pharaoh mistreated Moses birth family.
C _____ by his faith in Jehovah God.
3. Since God gave Canaan to former Egyptian slaves, they were not required to do anything to receive their Land of Promise.
True _____ False _____
4. People who are slaves to sin today are not required to do anything to inherit Heaven, the spiritual Promised Land.
True _____ False _____
5. God trained Moses 40 years in Egypt and 40 years as a herdsman before appointing him to lead the Children of Israel out of Egyptian slavery.
True _____ False _____

एक और चालीस साल के लिए प्रशिक्षित किया, इससे पहले कि वह अब्राहम के वंशजों को गुलामी के बंधन से उस देश में ले जाने के लिए बुलाए, जिसका वादा बहुत पहले अब्राहम, इसहाक और याकूब से किया गया था।

इन पूर्व दासों के विश्वास और आज्ञाकारिता की कमी के कारण, उन्हें अपनी प्रतिज्ञा की हुई भूमि का पालन करने और दावा करने के लिए तैयार होने में चालीस साल लग गए। भले ही यह भूमि उन्हें भगवान की कृपा से दी गई थी, लेकिन उन्हें इसमें रहने के लिए भगवान के दुश्मनों से लड़ना पड़ा।

आज मानव जाति पाप के बंधन में है। हम मसीह के लहू के द्वारा पाप के बंधन से मुक्त हुए हैं। हमेशा परमेश्वर के शत्रुओं से लड़ते हुए, स्वर्ग, हमारी प्रतिज्ञा की भूमि तक पहुँचने के लिए हमें निरंतर आज्ञाकारिता और विश्वासयोग्यता की आवश्यकता होती है।

प्रश्न

1. मूसा एक गुलाम पैदा हुआ था, लेकिन फिरौन का पोता बन गया, जो पूरे मिस्र का शासक था।
सही गलत _____
2. मूसा ने फिरौन के पोते के रूप में बने रहने का चुनाव नहीं किया
A _____ क्योंकि फिरौन अन्य पोते-पोतियों के प्रति पक्षपाती था
बी _____ क्योंकि फिरौन ने मूसा के जन्म परिवार के साथ दुर्व्यवहार किया।
सी _____ यहोवा परमेश्वर में अपने विश्वास के द्वारा।
3. चूँकि परमेश्वर ने कनान को मिस्र के भूतपूर्व दासों को दिया था, इसलिए उन्हें अपनी प्रतिज्ञा की भूमि प्राप्त करने के लिए कुछ भी करने की आवश्यकता नहीं थी।
सही गलत _____
4. जो लोग आज पाप के दास हैं, उन्हें स्वर्ग, आत्मिक प्रतिज्ञा की भूमि को प्राप्त करने के लिए कुछ भी करने की आवश्यकता नहीं है।
सही गलत _____
5. परमेश्वर ने मूसा को मिस्र में 40 वर्ष और एक चरवाहे के रूप में 40 वर्षों के लिए प्रशिक्षित किया, उसे मिस्र की दासता से इस्राएल के बच्चों का नेतृत्व करने के लिए नियुक्त किया।
सही गलत _____

Deliverance

Lesson 7

At the appropriate time Moses' mother took Moses to Pharaoh's daughter. "Moses was educated in all the wisdom of the Egyptians and was powerful in speech and action. When Moses was forty years old, he decided to visit his fellow Israelites. He saw one of them being mistreated by an Egyptian, so he went to his defense and avenged him by killing the Egyptian. Moses thought that his own people would realize that God was using him to rescue them, but they did not." (Acts 7:22-26)

In fear resulting from his rash action he fled from Pharaoh, going to the land of Midian. He humbled himself as a shepherd for forty years, after which God was ready for him to deliver the descendants of Abraham, Isaac and Jacob from the bondage of physical slavery, a symbol of our slavery to sin. God gave Pharaoh and the Egyptians ten opportunities to choose obedience over destruction. Pharaoh appeared to recognize God's power but with each passing opportunity it was easier for him to refuse. After the death of his first born he told the Israelites to leave. But he changed his mind and pursued them to bring them back to slavery.

It was at the Red Sea that the Israelites had to make a choice to obey God or return to slavery. It was also there that Pharaoh and his army were buried in the waters of the sea. A new nation, freed from slavery, arose on the other side. This is also like our flight from sin. At the cross of Christ, we must make a decision and bury our sinful master in the waters of baptism in order to arise as a new creation. Paul stated in Romans 6:3-7 "Or don't you know that all of us who were baptized into Christ Jesus were baptized into his death? We were therefore buried with him through baptism into death in order that, just as Christ was raised from the dead through the glory of the Father, we too may live a new life. If we have been united with him like this in his death, we will certainly also be united with him in his resurrection. For we know that our old self was crucified with him so that the body of sin might be done away with, that we should no longer be slaves to sin- because anyone who has died has been freed from sin."

They did not enter into Canaan immediately as

पाठ 7

उचित समय पर मूसा की माता मूसा को फिरौन की बेटी के पास ले गई। "मूसा मिस्रियों के सभी ज्ञान में शिक्षित था और भाषण और कार्य में शक्तिशाली था। जब मूसा चालीस वर्ष का था, तो उसने अपने साथी इस्राएलियों से मिलने का फैसला किया। उसने देखा कि उनमें से एक मिस्री द्वारा दुर्व्यवहार किया जा रहा था, इसलिए वह अपने पास गया रक्षा और मिस्री को मार कर उसका बदला लिया। मूसा ने सोचा था कि उसके अपने लोगों को पता चल जाएगा कि भगवान उन्हें बचाने के लिए उसका इस्तेमाल कर रहे थे, लेकिन उन्होंने नहीं किया।" (प्रेरितों के काम 7:22-26)

अपने उतावले काम के डर से वह फिरौन के पास से भाग गया, और मिदयान देश को चला गया। उसने खुद को एक चरवाहे के रूप में चालीस वर्षों तक दीन किया, जिसके बाद परमेश्वर उसके लिए अब्राहम, इसहाक और याकूब के वंशजों को शारीरिक दासता के बंधन से मुक्त करने के लिए तैयार था, जो पाप की हमारी दासता का प्रतीक है। परमेश्वर ने फिरौन और मिस्रियों को विनाश पर आज्ञाकारिता चुनने के दस अवसर दिए। फिरौन परमेश्वर की शक्ति को पहचानता हुआ दिखाई दिया, लेकिन हर गुजरते अवसर के साथ उसके लिए मना करना आसान हो गया। अपने पहले बच्चे की मृत्यु के बाद उसने इस्राएलियों को जाने के लिए कहा। लेकिन उसने अपना मन बदल लिया और उन्हें गुलामी में वापस लाने के लिए उनका पीछा किया।

यह लाल समुद्र पर था कि इस्राएलियों को परमेश्वर की आज्ञा मानने या दासता में लौटने का चुनाव करना था। यह वहाँ भी था कि फिरौन और उसकी सेना को समुद्र के पानी में दफनाया गया था। दूसरी तरफ गुलामी से मुक्त एक नए राष्ट्र का उदय हुआ। यह भी पाप से हमारी उड़ान के समान है। मसीह के क्रूस पर, हमें एक निर्णय लेना चाहिए और एक नई सृष्टि के रूप में उठने के लिए अपने पापी स्वामी को बपतिस्मा के जल में दफना देना चाहिए। पौलुस ने रोमियों 6:3-7 में कहा, "या क्या तुम नहीं जानते कि हम सब ने जो मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया? पिता की महिमा के द्वारा मरे हुआओं में से जी उठे, तो हम भी नया जीवन जीएं: यदि हम उसकी मृत्यु में उसके साथ ऐसे ही एक हो जाएं, तो उसके पुनरुत्थान में भी उसके साथ एक हो जाएं।"

उन्होंने तुरंत कनान में प्रवेश नहीं किया क्योंकि उनका विश्वास कमजोर था। उन्होंने यहोशू और कालेब की रिपोर्ट को ठुकरा दिया जो परमेश्वर पर भरोसा रखते थे।

नतीजतन, वे जंगल में, अपनी वादा की गई भूमि के पास, चालीस वर्षों तक भटकते रहे, कभी भी वादा किए गए देश में प्रवेश नहीं किया। यह तब तक नहीं था जब तक कि बीस वर्ष से अधिक आयु के सभी पुरुषों की मृत्यु नहीं हुई

their faith was weak. They rejected the report of Joshua and Caleb who trusted in God.

Consequently, they wandered in the wilderness, near their promised land, for forty years, never entering the Promised Land. It wasn't until all males over twenty died (except Joshua and Caleb) that they would be allowed to enter the Promised Land. Moses was prohibited, by God from leading them into Canaan. Instead it was Joshua, Moses' faithful aide. **Once they put their faith in God and obeyed him, they were allowed to enter their Promised Land. We too must have obedient faith and be reconciled to God to enter our Promised Land, Heaven.**

Questions

1. In attempting to deliver Israel from oppression, Moses attempted to take matters into his own hands rather than waiting upon God.

True _____ False _____

2. God did not give Pharaoh the choice to escape death and destruction.

True _____ False _____

3. Faith in God allowed the Children of Israel to pass through the waters of the Red Sea to become free from bondage and arrive upon the other shore a new nation.

True _____ False _____

4. Upon first reaching the Land of Promise, the children of Israel put their faith in

A _____ the report of Joshua and Caleb with God's guidance.

B _____ their own ability.

5. Moses was permitted to

A _____ lead the Israelites into the Land of Promise.

B _____ enter the promised land but told Joshua to lead.

C _____ see but not enter the Land of Promise.

Tables of Stone Covenant

Lesson 8

God performed many miracles of blessing upon the Israelites, the most prominent being the leading of millions of slaves toward a land promised years before to Abraham.

(यहोशू और कालेब को छोड़कर) कि उन्हें वादा किए गए देश में प्रवेश करने की अनुमति नहीं दी जाएगी। मूसा को परमेश्वर ने उन्हें कनान में ले जाने से मना किया था। इसके बजाय यह मूसा का वफादार सहयोगी यहोशू था। एक बार जब उन्होंने परमेश्वर पर विश्वास किया और उसकी आज्ञा का पालन किया, तो उन्हें अपने वादा किए गए देश में प्रवेश करने की अनुमति दी गई। हमें भी आज्ञाकारी विश्वास होना चाहिए और अपनी प्रतिज्ञा की हुई भूमि, स्वर्ग में प्रवेश करने के लिए परमेश्वर से मेल-मिलाप करना चाहिए।

प्रश्न

1. इस्राएल को जुल्म से छुड़ाने के प्रयास में, मूसा ने परमेश्वर की प्रतीक्षा करने के बजाय मामलों को अपने हाथों में लेने का प्रयास किया।

सही गलत _____

2. परमेश्वर ने फिरोन को मृत्यु और विनाश से बचने का विकल्प नहीं दिया।

सही गलत _____

3. परमेश्वर में विश्वास ने इस्राएल के बच्चों को लाल सागर के पानी से गुजरने और बंधन से मुक्त होने और दूसरे किनारे पर एक नए राष्ट्र के आने की अनुमति दी।

सही गलत _____

4. वचन के देश में पहिले पहुँचने पर, इस्राएलियों ने विश्वास किया

ए _____ भगवान के मार्गदर्शन के साथ यहोशू और कालेब की रिपोर्ट।

बी _____ अपनी क्षमता।

5. मूसा को अनुमति दी गई थी

A _____ इस्राएलियों को प्रतिज्ञा के देश में ले जाता है।

बी _____ वादा किए गए देश में प्रवेश करें लेकिन यहोशू को नेतृत्व करने के लिए कहा।

सी _____ देखें लेकिन वादा की भूमि में प्रवेश न करें।

पाषाण वाचा की सारणी

पाठ 8

परमेश्वर ने इस्राएलियों पर आशीष के कई चमत्कार किए, जिनमें से सबसे प्रमुख था लाखों दासों की अगुवाई उस देश की ओर करना जिसकी प्रतिज्ञा इब्राहीम से वर्षों पहले की गई थी।

मिस्र से निकलने के तीन महीने बाद और इब्राहीम से परमेश्वर की प्रतिज्ञा के लगभग चार सौ वर्ष बाद उन्होंने सीनै में डेरे डाले। यहाँ परमेश्वर प्रकट हुए, मूसा को उसकी आज्ञाएँ सुनाते हुए। "यहोवा ने मूसा से कहा, पहाड़ पर मेरे

Three months after they departed Egypt and around four hundred years after God's promise to Abraham they camped at Sinai. Here God appeared, delivering to Moses his commandments. "The Lord said to Moses, 'Come up to me on the mountain and stay here, and I will give you the tablets of stone, with the law and commands I have written for their instruction'." (Exodus 24:12) We refer to them as the Ten Commandments and they are listed below. (Exodus 20:3-17)

- ° "You shall have no other gods before me."
- ° "You shall not make for yourself an idol in the form of anything in heaven above or on the earth beneath or in the waters below. You shall not bow down to them or worship them; for I, the Lord your God, am a jealous God, punishing the children for the sin of the fathers to the third and fourth generation of those who hate me, but showing love to a thousand [generations] of those who love me and keep my commandments."
- ° "You shall not misuse the name of the Lord your God, for the Lord will not hold anyone guiltless who misuses his name."
- ° "Remember the Sabbath day by keeping it holy. Six days you shall labor and do all your work, but the seventh day is a Sabbath to the Lord your God. On it you shall not do any work, neither you, nor your son or daughter, nor your manservant or maidservant, nor your animals, nor the alien within your gates. For in six days the LORD made the heavens and the earth, the sea, and all that is in them, but he rested on the seventh day. Therefore the LORD blessed the Sabbath day and made it holy."
- ° "Honor your father and your mother, so that you may live long in the land the LORD your God is giving you."
- ° "You shall not murder."
- ° "You shall not commit adultery."
- ° "You shall not steal."
- ° "You shall not give false testimony against your neighbor."
- ° "You shall not covet your neighbor's house. You shall not covet your neighbor's wife, or his manservant or maidservant, his ox or donkey, or anything that belongs to your neighbor."

पास आ, और यहीं रह, और मैं तुझे पत्थर की पटियाएं दूंगा, और व्यवस्था और आज्ञाएं जो मैं ने उनकी शिक्षा के लिये लिखी हैं।" (निर्गमन 24:12) हम उन्हें दस आज्ञाओं के रूप में संदर्भित करते हैं और वे नीचे सूचीबद्ध हैं। (निर्गमन 20:3-17)

- ° "मेरे सामने तुम्हारे पास कोई अन्य देवता नहीं होगा।"
- ° "तू ऊपर स्वर्ग में या नीचे पृथ्वी पर या नीचे के पानी में किसी भी चीज़ के रूप में अपने लिए एक मूर्ति नहीं बनाना चाहता है। आप उन्हें झुकाएंगे या उनकी पूजा नहीं करेंगे; क्योंकि मैं, तुम्हारा भगवान, एक हूँ ईर्ष्यालु परमेश्वर, जो मुझ से बैर रखते हैं, और जो मुझ से प्रेम रखते और मेरी आज्ञाओं को मानते हैं, उन में से तीसरी और चौथी पीढ़ी को पितरों के पाप का दण्ड बच्चों को देता है, परन्तु एक हजार [पीढ़ी] से प्रेम करता है।"
- ° "तू अपने परमेश्वर यहोवा के नाम का दुरूपयोग न करना, क्योंकि यहोवा किसी को निर्दोष न ठहराएगा जो उसके नाम का दुरूपयोग करता है।"
- ° "सब्त के दिन को पवित्र रखकर स्मरण रखना। छः दिन तक परिश्रम करो और अपना सब काम करो, परन्तु सातवां दिन उनके लिये विश्रामदिन है
भगवान आपके भगवान। उस पर न तो तू, न तेरा बेटा या बेटा, न तेरा दास, न दासी, न पशु, और न परदेशी तेरे फाटकोंके भीतर कोई काम करना। क्योंकि छः दिन में यहोवा ने आकाश और पृथ्वी, समुद्र, और जो कुछ उन में है सब को बनाया, परन्तु सातवें दिन विश्राम किया। इस कारण यहोवा ने सब्त के दिन को आशीष दी और उसे पवित्र ठहराया।"
- ° "अपने पिता और अपनी माता का आदर करना, जिस से जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उस में तू बहुत दिन तक जीवित रहे।"
- ° "तुम हत्या नहीं करोगे।"
- ° "तुम व्यभिचार नहीं करना।"
- ° "तू चोरी नहीं करेगा।"
- ° "तू अपने पड़ोसी के विरुद्ध झूठी गवाही न देना।"
- ° "तू अपने पड़ोसी के घर का लालच न करना। तू अपने पड़ोसी की पत्नी, या उसके दास या दासी, उसके बैल या गधे, या अपने पड़ोसी की किसी भी चीज़ का लालच नहीं करना।"

उन्हें फिर से पढ़ें और ध्यान दें कि वे कानून, नियम, कानून, करने की चीजें और नहीं करने वाली चीजें हैं। क्या आपको क्षमा या विश्वास का कोई कथन मिला? नहीं! क्या आपने देखा कि केवल एक या दो ही मनुष्य के दिल, दिमाग या व्यवहार से संबंधित हैं? नहीं! यह वाचा हमें मसीह के पास लाने के लिए बनाई गई थी, और जैसा कि इब्रानियों में कहा गया है, एक नई वाचा के द्वारा प्रतिस्थापित की जाती है, एक वाचा जो दुष्टता को क्षमा करती है। "क्योंकि यदि उस पहिले वाचा में कुछ भी गलत न होता, तो दूसरे के लिये कोई स्थान न ढूँढा जाता। परन्तु परमेश्वर ने लोगों में दोष पाया और कहा: 'समय आ रहा

Read them again and notice that they are laws, rules, regulations, things to do and things not to do. Did you find any statement of forgiveness or faith? No! Did you notice that only one or two dealt with man's heart, mind or attitude? No! This covenant was designed to bring us to Christ, and as stated in Hebrews, is replaced by a new one, a covenant that forgives wickedness. "For if there had been nothing wrong with that first covenant, no place would have been sought for another. But God found fault with the people and said: 'The time is coming, declares the Lord, when I will make a new covenant with the house of Israel and with the house of Judah. It will not be like the covenant I made with their forefathers when I took them by the hand to lead them out of Egypt, because they did not remain faithful to my covenant, and I turned away from them, declares the Lord.'" (Hebrews 8:7-9 quoting Jeremiah 31:31)

"This is the covenant I will make with the house of Israel after that time, declares the Lord. I will put my laws in their minds and write them on their hearts. I will be their God, and they will be my people. No longer will a man teach his neighbor, or a man his brother, saying, 'Know the Lord,' because they will all know me, from the least of them to the greatest. For I will forgive their wickedness and will remember their sins no more.'" (Hebrews 8:10-12)

"By calling this covenant 'new,' he has made the first one obsolete; and what is obsolete and aging will soon disappear." (Hebrews 8:13)

When Jesus came, he preached a message of repentance, a message of God's grace and of faith, love and reconciliation. His mission was "to do the will of him who sent me and to finish his work." (John 4:34) He opened the way for forgiveness of sin by willingly giving his life as the atoning sacrifice for OUR sins, to all who believe on Him and who "wholeheartedly obeyed the form of teaching to which you were entrusted." (Romans 6:17)

"Before this faith came, we were held prisoners by the law, locked up until faith should be revealed. So the law was put in charge to lead us to Christ that we might be justified by faith. Now that faith has come, we are no longer under the supervision of the law." (Galatians 3:23-25)

है, यहोवा की यही वाणी है, जब मैं उसके साथ एक नई वाचा बान्धूंगा। इस्राएल के घराने और यहूदा के घराने के साथ यह उस वाचा के समान न होगा, जो मैं ने उनके पुरखाओं से उस समय बान्धी थी, जब मैं ने उनका हाथ पकड़कर उन्हें मिस्र देश से निकाल दिया, क्योंकि वे मेरी वाचा पर विश्वास नहीं करते थे।

"यह वाचा मैं उस समय के बाद इस्राएल के घराने के साथ बान्धूंगा, यहोवा की यही वाणी है। मैं अपक्की व्यवस्था उनके मन में रखूंगा, और उन्हें उनके मन में लिखूंगा। मैं उनका परमेश्वर ठहरूंगा, और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे।" फिर कोई आपके पड़ोसी वा आपके भाई को यह न सिखाएगा, कि यहोवा को जानो, क्योंकि छोटे से ले कर बड़े तक वे सब मुझे जानेंगे, क्योंकि मैं उनका अधर्म क्षमा करूंगा, और उनके पापोंको स्मरण करूंगा। अब और नहीं।" (इब्रानियों 8:10-12)

"इस वाचा को 'नया' कहकर, उसने पहली वाचा को अप्रचलित कर दिया है; और जो अप्रचलित है और बूढ़ा हो गया है वह जल्द ही गायब हो जाएगा।" (इब्रानियों 8:13)

जब यीशु आया, तो उसने पश्चाताप का संदेश, ईश्वर की कृपा और विश्वास, प्रेम और मेल-मिलाप का संदेश दिया। उसका मिशन था "उसकी इच्छा पूरी करना जिसने मुझे भेजा है और उसका काम पूरा करना है।" (यूहन्ना 4:34) उसने हमारे पापों के प्रायश्चित्त बलिदान के रूप में स्वेच्छा से अपना जीवन देने के द्वारा पाप की क्षमा के लिए मार्ग खोल दिया, उन सभी के लिए जो उस पर विश्वास करते हैं और जिन्होंने "जिस शिक्षा को तुम्हें सौंपा गया था उसका पूरे मन से पालन किया।" (रोमियों 6:17)

"इस विश्वास के आने से पहिले, हम व्यवस्था के द्वारा बन्धुआई में थे, और विश्वास के प्रगट होने तक हम को बन्दी रखा गया था। सो हमें मसीह तक ले जाने के लिथे व्यवस्था दी गई, कि हम विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरें। अब वह विश्वास आ गया है, तो हम हैं अब कानून की निगरानी में नहीं है।" (गलतियों 3:23-25)

"और तू ने आपके अपराधों और अपने शरीर के खतनारहित होने के कारण मरा हुआ होकर, जो हमारे विरोध में हमारे विरोध में था, उस की लिखावट को मिटाकर, सब अपराधों को क्षमा करके, उसके साथ जीवित किया है। और वह क्रूस पर कीलों से ठोंककर उसे मार्ग से हटा लिया है।" (कुलुस्सियों 2:13-14 एनकेजेवी)

परमेश्वर के प्रेम और दया ने उसके पुत्र में सिद्ध लहू बलिदान प्रदान किया। मसीह की मृत्यु ने "नई वाचा" की स्थापना की, जो उन सभी को पापों की क्षमा और पाप से मुक्ति प्रदान करती है जो पश्चाताप और आज्ञाकारिता की बुलाहट का पालन करते हैं। (इब्रानियों 9:16-28 पढ़ें)।

"And you, being dead in your trespasses and the uncircumcision of your flesh, He has made alive together with Him, having forgiven you all trespasses, having wiped out the handwriting of requirements that was against us, which was contrary to us. And He has taken it out of the way, having nailed it to the cross." (Colossians 2:13-14 NKJV)

God's love and mercy provided the perfect blood sacrifice in His Son. Christ's death established the "new covenant", providing for forgiveness of sins and freedom from sin to all who obey the call to repentance and obedience. (Read Hebrews 9:16-28).

So "Speak and act as those who are going to be judged by the law that gives freedom, because judgment without mercy will be shown to anyone who has not been merciful. Mercy triumphs over judgment"! (James 2:12-13)

Questions

1. God called Moses upon the mountain to give him the Ten Commandments for the
A ___ Gentiles and Israelites [Jews].
B ___ Children of Israel forever.
C ___ Israelites until replaced by another and better covenant.
2. The Ten Commandments, the Law, was a tutor or custodian to bring mankind unto faith.
True ___ False ___
3. Some of the Ten Commandments could be kept outwardly even though they were not kept inwardly in the mind and heart.
True ___ False ___
4. The Law of Moses provided for salvation, the forgiveness of sin.
True ___ False ___
5. God removed the Law of Moses, "the handwriting of requirements", by nailing it to the cross by the death of Christ.
True ___ False ___

After God's Heart

तो "बोलो और उन लोगों के रूप में कार्य करें जो कानून द्वारा न्याय किए जाने वाले हैं जो स्वतंत्रता देता है, क्योंकि दया के बिना निर्णय किसी को भी दिखाया जाएगा जो दयालु नहीं है। दया न्याय पर विजय प्राप्त करती है"! (याकूब 2:12-13)

प्रश्न

1. परमेश्वर ने मूसा को पहाड़ पर बुलाया कि वह उसके लिए दस आज्ञाएं दें ए ___ अन्यायियों और इस्राएलियों [यहूदी]।
बी ___ हमेशा के लिए इजराइल के बच्चे।
सी ___ इस्राएलियों को एक और और बेहतर वाचा द्वारा प्रतिस्थापित किया गया।
2. दस आज्ञाएँ, कानून, एक शिक्षक या संरक्षक था मानव जाति को विश्वास में लाने के लिए।
सही गलत ___
3. दस आज्ञाओं में से कुछ को बाहरी रूप से रखा जा सकता था, भले ही वे मन और हृदय में आंतरिक रूप से न रखी गई हों।
सही गलत ___
4. मूसा की व्यवस्था ने उद्धार, पाप की क्षमा के लिए व्यवस्था की।
सही गलत ___
5. परमेश्वर ने मूसा की व्यवस्था, "आवश्यकताओं की लिखावट" को हटा दिया, इसे मसीह की मृत्यु के द्वारा सूली पर चढ़ा दिया।
सही गलत ___

भगवान के दिल के बाद

पाठ 9

मिस्र की गुलामी से छुड़ाए जाने और दूध और शहद से बहने वाली भूमि को प्राप्त करने के बाद, इस्राएल पर न्यायियों का शासन था जिन्हें परमेश्वर ने चुना था। परन्तु इस्राएली अपने चारों ओर के सभी राष्ट्रों के समान बनना चाहते थे। उन्होंने भगवान को अस्वीकार कर दिया और एक राजा चाहते थे। इसलिए, परमेश्वर ने उन्हें एक राजा दिया - शाऊल। उन्होंने शासन किया जो लोग चाहते थे - भगवान के आज्ञाकारी सेवक के बजाय राय से शासन करें। इसलिए, शमूएल ने परमेश्वर के निर्देश पर दाऊद को राजा के रूप में अभिषेक किया, जो उसकी आज्ञा का पालन करेगा। कई बार दाऊद को शाऊल के पास से भागना पड़ा क्योंकि शाऊल एक आम अपराधी की तरह उसका शिकार कर

Lesson 9

After being delivered from Egyptian slavery and receiving a land flowing with milk and honey, Israel was governed by judges whom God selected. But the Israelites wanted to be like all the nations around them. They rejected God and wanted a king. So, God gave them a king - Saul. He ruled by what the people wanted - rule by opinion rather than as an obedient servant of God. Therefore, Samuel, at God's direction, anointed David as king, one who would obey him. Many times David had to flee from Saul because Saul was hunting him down like a common criminal desiring to kill him. Yet, in spite of this David refused to do anything "against God's anointed".

After Saul's death David became king. God said of David: "After removing Saul, he made David their king. He testified concerning him: 'I have found David son of Jesse a man after my own heart; he will do everything I want him to do.' From this man's descendants God has brought to Israel the Savior Jesus, as he promised." (Acts 13:22-23)

On one occasion David's men were among the flocks of a very wealthy man and while there they dealt honorably with him protecting him, not mistreating his herdsman or taking anything of his. Later David was nearby, his men were hungry and in need of food so David requested assistance, but Nabal, a surly man known for his mean dealings, refused David's request in a harsh and disrespectful manner. David became very angry, intending to kill him, but he repented, allowing God to exercise his judgment.

But not everything was godly in David's life. Instead of going to battle with his army he remained at home. There he saw a lovely woman, lusted for her and sent for her to commit adultery. Learning she was pregnant, David ordered the murder of her husband to cover up his sin. Terrible? Yes! Pleasing to God? No! David desired fleshly satisfaction and yielded to the temptation. He suffered much for this sin. But when confronted by Nathan, the messenger from God, he admitted his wickedness, repented and pleaded for forgiveness. Although forgiven, he still suffered the consequences of his sinful actions.

रहा था जो उसे मार डालना चाहता था। फिर भी, इसके बावजूद दाऊद ने "परमेश्वर के अभिषिक्त के विरुद्ध" कुछ भी करने से इनकार कर दिया।

शाऊल की मृत्यु के बाद दाऊद राजा बना। परमेश्वर ने दाऊद के बारे में कहा: "शाऊल को हटाने के बाद, उसने दाऊद को अपना राजा बनाया। उसने उसके बारे में गवाही दी: 'मैंने यिश्ई के पुत्र दाऊद को अपने दिल के अनुसार एक आदमी पाया है; वह वह सब कुछ करेगा जो मैं उससे चाहता हूँ।' इस मनुष्य के वंश में से परमेश्वर ने इस्राएल के लिए उद्धारकर्ता यीशु को लाया है, जैसा कि उसने वादा किया था।" (प्रेरितों 13:22-23)

एक अवसर पर दाऊद के लोग एक बहुत धनी व्यक्ति के झुंडों में से थे, और वहाँ उन्होंने उसकी रक्षा करने के साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार किया, न कि उसके चरवाहों के साथ दुर्व्यवहार किया और न ही उसका कुछ लिया। बाद में दाऊद पास था, उसके आदमी भूखे थे और उसे भोजन की आवश्यकता थी इसलिए दाऊद ने सहायता का अनुरोध किया, लेकिन नाबाल, एक चतुर व्यक्ति, जो अपने मतलबी व्यवहार के लिए जाना जाता था, ने कठोर और अपमानजनक तरीके से दाऊद के अनुरोध को अस्वीकार कर दिया। दाऊद बहुत क्रोधित हुआ, उसे मारने का इरादा किया, लेकिन उसने पश्चाताप किया, परमेश्वर को अपना न्याय करने की अनुमति दी।

परन्तु दाऊद के जीवन में सब कुछ ईश्वरीय नहीं था। अपनी सेना के साथ युद्ध करने के बजाय वह घर पर ही रहा। वहाँ उसने एक सुंदर स्त्री को देखा, जो उस पर तरस गई और उसे व्यभिचार करने के लिए भेजा। यह जानकर कि वह गर्भवती है, दाऊद ने उसके पाप को छिपाने के लिए उसके पति की हत्या का आदेश दिया। भयानक? हाँ! भगवान को प्रसन्न? नहीं! दाऊद ने शारीरिक संतुष्टि की इच्छा की और प्रलोभन के आगे झुक गया। इस पाप के लिए उन्होंने बहुत कुछ सहा। परन्तु जब परमेश्वर के दूत नातान से उसका सामना हुआ, तो उसने अपनी दुष्टता स्वीकार की, पश्चाताप किया और क्षमा की याचना की। हालाँकि उसे क्षमा कर दिया गया, फिर भी उसे अपने पापी कार्यों के परिणाम भुगतने पड़े।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि उसके हृदय की मनोवृत्ति, उसका पश्चाताप और परमेश्वर से मेल मिलाप करने के लिए क्षमा की इच्छा यही कारण है कि परमेश्वर कहेगा "मैंने यिश्ई के पुत्र दाऊद को अपने मन के अनुसार पाया है, जो मेरी सारी इच्छा पूरी करेगा।" आज सबकी यही स्थिति है। हम सभी ने पाप किया है, हमें अपने पाप के प्रति उचित दृष्टिकोण की आवश्यकता है और हमें परमेश्वर के साथ मेल मिलाप करने की आवश्यकता है।

परमेश्वर ने दाऊद से वादा किया था कि उसका एक वंशज हमेशा के लिए उसके सिंहासन पर बैठेगा, यीशु, मसीह का जिक्र करते हुए, जिसके राज्य का

No doubt his attitude of heart, his remorse and desire for forgiveness in order to be reconciled to God is why God would say "I have found David the son of Jesse, a man after My own heart, who will do all My will." This is everyone's situation today. We have all sinned, need the proper attitude toward our sin and need to be reconciled to God.

God promised David that one of his descendants would sit on his throne forever, referring to Jesus, the Christ, whose kingdom will have no end. **It was Christ, without sin, totally obeying God, willingly giving his life as an atoning sacrifice for us, thus fulfilling God's promise to David and Abraham.**

Questions

1. David refused to harm Saul, King of Israel, as he had been appointed king by God and to do harm to him would not be respecting God.

True _____ False _____

2. A person after God's own heart means

A _____ one who teaches God laws and commandments.

B _____ one who is powerful in leading God's people.

C _____ one who desires to do what is right and desires to correct sinful acts he may have done.

3. David is an example for us in that he

A _____ was a powerful King.

B _____ did not sin therefore Jesus who had no sin could be the Son of David.

C _____ was quick to repent and plead for God's mercy upon becoming aware of his sins.

4. God was always pleased with David's actions.

True _____ False _____

5. Jesus, a descendant of David, gave His life as the atoning sacrifice for forgiveness of sins

True _____ False _____

Prophets of the Old Covenant

Lesson 10

कोई अंत नहीं होगा। यह मसीह था, पाप रहित, पूरी तरह से परमेश्वर की आज्ञा का पालन करते हुए, स्वेच्छा से हमारे लिए प्रायश्चित्त बलिदान के रूप में अपना जीवन दे रहा था, इस प्रकार दाऊद और अब्राहम से परमेश्वर की प्रतिज्ञा को पूरा कर रहा था।

प्रश्न

1. दाऊद ने इस्राएल के राजा शाऊल को हानि पहुँचाने से इन्कार किया, क्योंकि वह परमेश्वर के द्वारा राजा ठहराया गया था और उसकी हानि करना परमेश्वर का सम्मान करना नहीं होगा।

सही गलत _____

2. भगवान के अपने दिल के अनुसार एक व्यक्ति का मतलब है

एक _____ जो भगवान के नियमों और आज्ञाओं को सिखाता है।

बी _____ जो भगवान के लोगों का नेतृत्व करने में शक्तिशाली है।

सी _____ जो सही करने की इच्छा रखता है और पापपूर्ण कृत्यों को ठीक करने की इच्छा रखता है जो उसने किया होगा।

3. दाऊद हमारे लिए एक उदाहरण है कि वह

एक _____ एक शक्तिशाली राजा था।

बी _____ ने पाप नहीं किया इसलिए यीशु जिसके पास कोई पाप नहीं था वह दाऊद का पुत्र हो सकता है।

सी _____ को पश्चाताप करने और अपने पापों से अवगत होने पर भगवान की दया के लिए प्रार्थना करने की जल्दी थी।

4. दाऊद के कार्यों से परमेश्वर हमेशा प्रसन्न रहता था।

सही गलत _____

5. दाऊद के वंशज यीशु ने पापों की क्षमा के लिए प्रायश्चित्त बलिदान के रूप में अपना जीवन दिया

सही गलत _____

पुरानी वाचा के पैगंबर

पाठ 10

उस युग के दौरान परमेश्वर ने सीधे आदम, नूह, अब्राहम, इसहाक और याकूब से बात की, जिसे कई लोग पितृसत्तात्मक युग के रूप में संदर्भित करते हैं। इस्राएल राष्ट्र की स्थापना के समय उस ने मूसा, यहोशू और फिर उनके न्यायियों से बातें कीं। जब शमूएल न्याय कर रहा था तब लोगों ने राजा की मांग करते हुए विद्रोह कर दिया। राजाओं के शासनकाल के दौरान परमेश्वर ने मनुष्यों के माध्यम से अपना संदेश दिया जिसे हम भविष्यद्वक्ता के रूप

God spoke directly to Adam, Noah, Abraham, Isaac and Jacob during the era many refer to as the Patriarchal Age. During the establishment of the nation of Israel He spoke to Moses, Joshua and then their judges. While Samuel was judge the people rebelled demanding a king. During the reign of the kings God delivered His message through men we refer to as prophets. All prophets delivered God's message to the Children of Israel but not all delivered prophecies about the coming Messiah. Over hundreds of years by and many different prophets more than 50 prophecies are recorded, all of which were fulfilled in Jesus. A few prophecies are listed below followed by their New Testament fulfillment.

Malachi 3:1 "Watch out! I'm sending my messenger, and he will prepare the way before me. Then suddenly the LORD you are looking for will come to his Temple. He is the messenger of the covenant whom you desire. Watch out! He is coming!" says the LORD of the Heavenly Armies.

Matthew 2:2 After Jesus had been born in Bethlehem of Judea in the days of King Herod, wise men from the east arrived in Jerusalem and asked, "Where is the one who was born king of the Jews? We saw his star in the east and have come to worship him."

Genesis 49:10 The scepter shall not depart from Judah, nor the ruler's staff from between his feet, until tribute comes to him; and to him shall be the obedience of the peoples.

Luke 3:23-38 - The genealogy of Jesus is tracing His lineage back through David all the way to Adam.

Jeremiah 23:5 "Behold, the days are coming, declares the LORD, when I will raise up for David a righteous Branch, and he shall reign as king and deal wisely, and shall execute justice and righteousness in the land.

Matthew 1:1 This is a record of the life of Jesus the Messiah, the son of David, the son of Abraham.

Isaiah 7:13 -4 And he said, "Hear then, O house of David! Is it too little for you to weary men, that you weary my God also? Therefore, the Lord himself will give you a sign. Behold, the

में संदर्भित करते हैं। सभी भविष्यवक्ताओं ने इस्राएल के बच्चों को परमेश्वर का संदेश दिया, लेकिन सभी ने आने वाले मसीहा के बारे में भविष्यवाणियां नहीं कीं। सैकड़ों वर्षों में और कई अलग-अलग भविष्यवक्ताओं को 50 से अधिक भविष्यवाणियां दर्ज की गई हैं, जो सभी यीशु में पूरी हुई थीं। कुछ भविष्यवाणियों को नीचे सूचीबद्ध किया गया है जिसके बाद उनके नए नियम की पूर्ति हुई है।

मलाकी 3:1"ध्यान रहे! मैं अपने दूत को भेज रहा हूँ, और वह मेरे आगे मार्ग तैयार करेगा। तब जिस यहोवा को तुम ढूँढ़ रहे हो, वह अचानक अपने भवन में आ जाएगा। वह वाचा का दूत है जिसे तुम चाहते हो। ध्यान रहे! वह आ रहा है!" स्वर्गीय सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है।

मती 2:2राजा हेरोदेस के दिनों में यहूदिया के बेटलेहेम में यीशु के जन्म के बाद, पूर्व से पण्डितों ने यरूशलेम में आकर पूछा, "यहूदियों का राजा कहाँ पैदा हुआ था? हमने पूर्व में उसका तारा देखा और आए हैं उसकी पूजा करने के लिए।"

उत्पत्ति 49:10 यहूदा के पास से राजदण्ड न छूटेगा, और न उसके पांवों के बीच से उसकी लाठी, जब तक कि उसे कर न मिले; और देश देश के लोगोंकी आज्ञा उसी की होगी।

लूका 3:23-38- यीशु की वंशावली दाऊद के माध्यम से आदम तक अपने वंश का पता लगा रही है।

यिर्मयाह 23:5"देख, यहोवा की यह वाणी है, ऐसे दिन आनेवाले हैं, जब मैं दाऊद के लिथे एक धर्मी डाली उठाऊंगा, और वह राजा होकर बुद्धिमानी से राज्य करेगा, और देश में न्याय और धर्म के काम करेगा।

मती 1:1 यह इब्राहीम के पुत्र दाऊद के पुत्र यीशु मसीह के जीवन का अभिलेख है।

यशायाह 7:13-4 और उस ने कहा, हे दाऊद के घराने, सुन, क्या तेरे लिथे मनुष्य को थका देना बहुत कम है, कि तू मेरे परमेश्वर को भी थका देता है? इसलिथे यहोवा तुझे एक चिन्ह देगा। देख, कुंवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र जने, और उसका नाम इम्मानुएल रखे।

मती 1:18 अब ईसा मसीह का जन्म इस प्रकार हुआ। जब उनकी माता मरियम यूसुफ से जुड़ी हुई थीं, उनके साथ रहने से पहले, उन्हें पवित्र आत्मा द्वारा गर्भवती होने का पता चला था।

मीका 5:2 परन्तु हे बेटलेहेम एप्राता, हे बेटलेहेम, जो यहूदा के कुलोंमें से बहुत छोटे हैं, मेरे लिथे मेरे लिथे एक ऐसा निकलेगा, जो इस्राएल पर प्रधान होगा, और जो प्राचीनकाल से और प्राचीनकाल से आता आया है।

virgin shall conceive and bear a son, and shall call his name Immanuel.

Matthew 1:18 Now the birth of Jesus the Messiah happened in this way. When his mother Mary was engaged to Joseph, before they lived together, she was discovered to be pregnant by the Holy Spirit.

Micah 5:2 But you, O Bethlehem Ephrathah, who are too little to be among the clans of Judah, from you shall come forth for me one who is to be ruler in Israel, whose coming forth is from of old, from ancient days.

Matthew 1:1 This is a record of the life of Jesus the Messiah, the son of David, [Bethlehem] the son of Abraham.

Zechariah 9:9 Rejoice greatly, O daughter of Zion! Shout aloud, O daughter of Jerusalem! Behold, your king is coming to you; righteous and having salvation is he, humble and mounted on a donkey, on a colt, the foal of a donkey.

Matthew 21:6-7 And the disciples went, and did even as Jesus appointed them, and brought the ass, and the colt, and put on them their garments; and he sat thereon.

Isaiah 53:5 But he was wounded for our transgressions, he was bruised for our iniquities; the chastisement of our peace was upon him; and with his stripes we are healed

Matthew 27:26 Then released he unto them Barabbas; but Jesus he scourged and delivered to be crucified.

Isaiah 53:7 He was oppressed, and he was afflicted, yet he opened not his mouth; like a lamb that is led to the slaughter, and like a sheep that before its shearers is silent, so he opened not his mouth.

Matthew 27:12-14 While Jesus was being accused by the high priests and elders, he made no reply. Then Pilate asked him, "Don't you hear how many charges they're bringing against you?" But Jesus did not reply at all, so that the governor was very surprised.

Isaiah 53:9 And they made his grave with the wicked and with a rich man in his death, although he had done no violence, and there was no deceit in his mouth.

मती 1:1 यह दाऊद के पुत्र यीशु मसीह के जीवन का अभिलेख है, [बेतलेहेम] इब्राहीम का पुत्र।

जकर्याह 9:9 हे सिय्योन की पुत्री, अति आनन्दित हो! हे यरूशलेम की पुत्री, ऊँचे स्वर से चिल्लाओ! देख, तेरा राजा तेरे पास आ रहा है; धर्मी और उद्धार पाने वाला वह है, दीन और गदहे पर, और बछेड़े पर, और गदहे का बच्चा।

मती 21:6-7 और चेलों ने जाकर वैसा ही किया जैसा यीशु ने उन्हें ठहराया, और गदहे और गदहे को ले जाकर अपने अपने वस्त्र पहिना लिए; और वह उस पर बैठ गया।

यशयाह 53:5 परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के कारण कुचला गया; हमारी शान्ति की ताड़ना उस पर थी; और उसके कोड़े खाने से हम चंगे हो जाते हैं

मती 27:26 तब उस ने बरअब्बा को उनके लिये छोड़ दिया; परन्तु यीशु ने कोड़े मारे और क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिए छोड़ा।

यशयाह 53:7 उस पर अन्धेर और दुःख हुआ, तौभी उस ने अपना मुंह न खोला; उस मेम्ने की नाई जो वध के लिये ले जाया जाता है, और उस भेड़ की नाई जो अपने कतरनेवालों के साम्हने चुप रहती है, सो उस ने अपना मुंह न खोला।

मती 27:12-14 जब यीशु पर महायाजकों और पुरनियों द्वारा आरोप लगाया जा रहा था, तो उसने कोई उत्तर नहीं दिया। तब पीलातुस ने उस से पूछा, क्या तू नहीं सुनता कि वे तुझ पर कितने आरोप लगा रहे हैं? परन्तु यीशु ने कोई उत्तर नहीं दिया, जिससे राज्यपाल को बहुत आश्चर्य हुआ।

यशयाह 53:9 और उन्होंने दुष्ट और धनवान के साथ उसकी मृत्यु के समय उसकी कब्र बनाई, यद्यपि उस ने कोई उपद्रव नहीं किया था, और न उसके मुंह से छल की कोई बात निकली थी।

मती 27:57-59 बाद में उस शाम अरिमथिया से एक अमीर आदमी आया। उसका नाम यूसुफ था, और वह यीशु का चेला बन गया था। वह पीलातुस के पास गया और उसने यीशु की लाश मांगी, और पीलातुस ने उसे करने का आदेश दिया। सो यूसुफ ने लोय को लेकर उसे एक साफ सनी के कपड़े में लपेट दिया। फिर उस ने उसे अपनी नई कब्र में रखा, जिसे उस ने चट्टान में से काटकर बनाया था। कब्र के द्वार पर एक बड़ा पत्थर लुढ़कने के बाद, वह चला गया,

प्रश्न

3. परमेश्वर ने सीधे आदम, नूह, अब्राहम और दाऊद से बात की।
सही गलत _____

Matthew 27:57-59 - Later that evening, a rich man arrived from Arimathea. His name was Joseph, and he had become a disciple of Jesus. He went to Pilate and asked for the body of Jesus, and Pilate ordered it to be done. So Joseph took the body and wrapped it in a clean linen cloth. Then he placed it in his own new tomb, which he had cut out of the rock. After rolling a large stone across the door of the tomb, he left,

Questions

1. God spoke directly with Adam, Noah, Abraham, and David.
True _____ False _____
2. There are no prophecies about a redeemer
True _____ False _____
3. Isaiah was the only prophet to prophecy about a Messiah?
True _____ False _____
4. There were over 50 prophecies by many prophets all of which were fulfilled in Jesus of Nazareth, The Christ
True _____ False _____
5. God delivered his message through the kings of Israel to His prophets.
True _____ False _____

4. एक उद्धारक के बारे में कोई भविष्यवाणियां नहीं हैं

सही गलत _____

5. यशायाह एक मसीहा के बारे में भविष्यवाणी करने वाला एकमात्र भविष्यद्वक्ता था?

सही गलत _____

6. कई भविष्यवक्ताओं द्वारा 50 से अधिक भविष्यवाणियां की गई थीं, जो सभी नासरत के यीशु, द क्राइस्ट में पूरी हुईं

सही गलत _____

7. परमेश्वर ने इस्राएल के राजाओं के द्वारा अपने भविष्यद्वक्ताओं को अपना सन्देश पहुँचाया।

सही गलत _____

International Bible Knowledge Institute - अंतर्राष्ट्रीय बाइबल ज्ञान संस्थान

Electives Studies - वैकल्पिक अध्ययन

Mortal Man From Life to Death - नश्वर मनुष्य जीवन से मृत्यु तक

Planned Redemption - नियोजित मोचन

Creation before Genesis - उत्पत्ति से पहले का निर्माण

What Shall We Do? हम क्या करें?

End of Time on Earth - पृथ्वी पर समय का अंत

Marriage and Divorce - विवाह और तलाक

Silence of the Scriptures - शास्त्रों की चुप्पी

Daniel - डैनियल

First Principles of Christ - मसीह के पहले सिद्धांत

Holy Spirit - पवित्र आत्मा

Types and Metaphors - पवित्र आत्मा

Additional Studies - वैकल्पिक अध्ययन

Today's Church Practices - वैकल्पिक अध्ययन

Compiling and Translating the Bible - बाइबल का संकलन और अनुवाद

Shadows, Types and Prophecies - छाया, प्रकार और भविष्यवाणियां

Teachings & Practices after AD 100 - 100 ईस्वी के बाद की शिक्षाएं और व्यवहार

God's Sabbath - भगवान का सבת

Promises Now and For Evermore - वादे अभी और हमेशा के लिए

God's Rebuilding Process - भगवान की पुनर्निर्माण प्रक्रिया

Living The Maximum Life - अधिकतम जीवन जीना

Real Men are Godly Men - सच्चे पुरुष ईश्वरीय पुरुष हैं

Living For One Another - एक दूसरे के लिए जीना

Greatest Questions Ever Asked - अब तक के सबसे बड़े सवाल

Wonderful Words Of Life - जीवन के अद्भुत शब्द

Lessons From The Cross - क्रॉस से सबक

Jehovah's Witnesses church - यहोवा के साक्षी चर्च

Interesting but not required for BKS award - दिलचस्प है लेकिन बीकेएस पुरस्कार के लिए आवश्यक नहीं

Outlined Bible - उल्लिखित बाइबिल

Summarized - सारांशित बाइबिल

LESSONS AND SERVICES PROVIDED BY *INTERNATIONAL BIBLE KNOWLEDGE INSTITUTE* ARE FREE OF CHARGE.
YOU WILL NEVER BE ASK FOR TUITION OR ANY OTHER FEE. *IBKI* IS NOT AN ACCREDITED INSTITUTION.

अंतर्राष्ट्रीय बाइबल ज्ञान संस्थान द्वारा प्रदान किए जाने वाले पाठ और सेवाएं निःशुल्क हैं। आपसे कभी भी ट्यूशन या कोई अन्य शुल्क नहीं मांगा जाएगा। आईबीकेआई एक मान्यता प्राप्त संस्थान नहीं है।

International Bible Knowledge Institute
Randolph Dunn, President
Roberto Santiago, Dean



अंतर्राष्ट्रीय बाइबल ज्ञान संस्थान
S.M.Vinay Kumar,
IBKI India Director

संस्थान का लक्ष्य परमेश्वर और उसकी इच्छा के बारे में अधिक जानने में रुचि रखने वाले किसी भी व्यक्ति को बाइबल पाठ उपलब्ध कराना है। पाठों को प्रिंट करने के लिए डाउनलोड किया जा सकता है, ऑनलाइन अध्ययन किया जा सकता है या व्यक्तियों या चर्चों द्वारा ईमेल मंत्रालय में उपयोग किया जा सकता है।

अंतर्राष्ट्रीय बाइबल ज्ञान संस्थान (IBKI) से डिप्लोमा प्राप्त करने के लिए एक छात्र ने चार आवश्यक पाठ्यक्रम और 7 वैकल्पिक पाठ पूरे किए होंगे।

उन्नत अध्ययन "बीकेएस" (बाइबिल नॉलेज स्कॉलर) पुरस्कार प्राप्त करने के लिए, एक डिप्लोमा अर्जित करने के अलावा एक छात्र ने सभी वैकल्पिक पाठ और 7 अतिरिक्त अध्ययन पूरे कर लिए होंगे।

आईबीकेआई गैर-व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए पुस्तकों और पाठों को उनकी संपूर्णता में बिना किसी परिवर्तन या शुल्क के पुनः पेश करने की अनुमति देता है।

Course One - The Message | कोर्स एक - संदेश

How Did Everything Get Here? सब कुछ यहाँ कैसे आया?

The Man Who Was God वह आदमी जो भगवान था

Christ - God's Mystery क्राइस्ट - भगवान का रहस्य

Myths About God भगवान के बारे में मिथक

Course Two - Obedience To His Message | पाठ्यक्रम दो - उनके संदेश की आज्ञाकारिता

Time Before Christ मसीह से पहले का समय

Time Christ on the Earth पृथ्वी पर समय मसीह

Time After Christ मसीह के बाद का समय

Time to Decide तय करने का समय

From Death Through The Cross To Life मृत्यु से क्रूस के द्वारा जीवन की

Course Three - A New Spiritual Life In Christ | कोर्स तीन - मसीह में एक नया आध्यात्मिक जीवन

Baptism into Christ मसीह में बपतिस्मा

Life to Death - The Mortal Life

A Kingdom Not Made With Hands हाथों से नहीं बना साम्राज्य

Servants In The Kingdom राज्य में सेवक

Message From The Epistles पत्रियों से संदेश

Worship God In Spirit and Truth आत्मा और सच्चाई से परमेश्वर की आराधना करें

Course Four - Maturing In Christ | कोर्स चार - मसीह में परिपक्व होना

Jesus of Nazareth नासरत का यीशु

Life Of Christ मसीह का जीवन

United in Christ में संयुक्त

Spiritual Milk आध्यात्मिक दूध

Body, Soul, Spirit - Where Do They Go When You Die? शरीर, आत्मा, आत्मा - जब आप मरते हैं तो वे कहाँ जाते हैं?

Living Liberated लिविंग लिबरेटेड

Revelation Of Jesus Christ यीशु मसीह का रहस्योद्घाटन

Distributed by

Hyderabad & Naidupet Church of Christ,

1-2-168, CBN Colony, Helping Hands Trust,

Naidupet-524 126, A.P,India

